अफ़कार

[पार्ट : 07]

मौज़ूआत

- मोमिनीन की रुहें अपने घरों में आती हैं
- असली सूफी कौन?
- मुआशरे में बढ़ती बे राहरवी एक लम्हा ए फ़िक्रिया
- इत्तेहाद कितनी बड़ी ताक़त?
- बिरादरी वाद से निजात ज़रूरी
- गैर-मुक़ल्लिदीन के गुमराहकुन अफ़कार व नज़रियात से इज्तेनाब की तदाबीर
- इस्लाम में सफाई की अहमियत , एहकामात , मंसूबे और इक़दामात
- धर्म, दीन, मज़हब में क्या फ़र्क़ है?
- नफरत के परवरदाह जराइम की बढ़ती तादाद
- पीर परस्ती से आला है किताबो सुन्नत से दोस्ती

शोबा ए इस्लाह | शोबा ए तहक़ीक़ | शोबा ए तनक़ीद

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

बरेली शरीफ

www.nizamemustafa.in

Book Name: AFKAR PART 7

Language: Hindi

Roman Translation: Muhammad Junaid Qadri

Hijri Date: 17 Jamadi ul Aakhir 1443 H

English Date: 21 Jan 2022 [Friday]

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa ﷺ (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://www.nizamemustafa.in/

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

पेशे लफ़्ज़

क़ुव्वते फिक्रो अमल पहले फना होती है

फिर किसी क़ौम की शौकत पर ज़वाल आता है।

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं है। हुकूमत इनके पास नहीं, इक़तिदारा इनका ख़त्म हो चुका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाकी थी जिसे फिक्र कहते हैं जिस फिक्र को ले कर ये उम्मत मेहनत और मशक्कत कर के अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फिक्र ही इस कौम के दिलों से फ़ना होती जा रही है और ये कौम अगियार की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ ख़त्म हो चुका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िंदगी जीते जा रहे हैं।

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रो रो कर गिड़गिड़ा कर माफ़ी मांगने का था कि हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते कि अल्लाह हमें माफ़ फरमा दे। हमें दर गुज़र फरमा दे। हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे एहकामात की पाबंदी नहीं की इसलिये हम पर ये मुसीबतें आई हुई हैं। ये तो वक़्त अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाह में रुजूअ़ करने का था और आप ﷺ के सदके अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमरा नफ्स हम से कह रहा है।

इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ ये है कि उम्मत ए मुस्लिमा की फिक्र को नई ताज़गी दी जाए और जो बुराइयाँ और नफरतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुज़दिली हमारा शिआर बन चुकी है इन सब को ख़त्म करने की कोशिश की जाए ये तभी हो सकता है जब मुआशिरे का हर फर्द बुराइयों को मिटाने के लिए जद्दो जिहद करे और उसको अपना एक अहम फर्ज़ समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोए हुख वक़ार वापस पा लेंगे, ज़रूरत है कौम के फिक्रो अमल पर काम करने की।

क़ारेईन से गुज़ारिश है कि इस मैग्ज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इससे सबक हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम के मुताबिक अमल करने की ज़रूरत है इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मकसद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाला अल्लाह की तौफीक़ से इन तालीमात पर अमल पैरा हो अल्लाह हमारा हामी और नासिर हो।

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

शोबा ए इस्लाह

मोमिनीन की रूहें अपने घरों में आती हैं

:आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलेह

بسم الله الرحمن الرحيم

<u>मसअला 13 शाबान उल मुअज़्ज़म 1321 हिजरी,</u>

क्या फरमाते हैं उलामा ए दीन और शरए मतीन इस मसअले में कि जिस वक्त रूह इंसान की अपने जिस्म से परवाज़ कर जाती है, बाद उसके फिर भी कभी अपने मकान पर आती है या नहीं ? और उस से कुछ सवाब की ख्वाहिश्तगार जैसे कुरआने मजीद या खैरात बगैरह तुआम हो या रुपया, पैसा होती है या नहीं? और अगर रूह अपने मकान पर आती है तो किस-किस दिन आया करती है? और उस से मुनकिर (यानी रूहों के आने से इंकार करने वाला) गुनाहगार है या नहीं? और अगर गुनाहगार है तो किस गुनाह में शामिल है?

بينوا توجروا

जवाब:

ख़ातिमुल मुहद्देसीन शैख़े मुहक़्क़िक मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस ए देहलवी रहमतुल्लाह अलैह शरह मिशक़ात शरीफ़ बाब ज़ियारत उल क़ुबूर में फरमाते हैं:

مستحب است کہ تصدق کردہ شود از میت بعد از رفتن او از عالم تا هفت روز، تصدق از میت نفع می کند او را بے خلاف میان اہل علم و وارد شدہ است در آن احادیث صحیح خصوصا آب و بعضے از علماء گفتہ اند کہ نمی رسد بہ میت را مگر صدقہ و دعا و در بعضے روایات آمدہ است کہ روح میت می آید خانہ خود را شب جمعہ پس نظر می کند، کہ تصدق می کنند از دے یا نہ۔ واللہ تعالی اعلم۔

(اشعة اللمعات، باب زيارة القبور، مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر، ج۱ص ۷۱۶)

मय्यत के दुनिया से रुखसत होने के सात रोज़ तक उसकी जानिब से सदका करना मुस्तहब है। मय्यत की तरफ़ से सदका करना बा इत्तेफाके अहले इल्म, नफा बख्श है। इस सिलसिले में अहादीसे सहीहा वारिद हैं, खुसूसन पानी। और बाज़ उलामा का कहना है कि मय्यत को सदका और दुआ के सिवा कुछ नहीं पहुंचता है और बाज़ रिवायात में आया है के मय्यत की रूह अपने घर में जुमे की रात को आकर देखती है की उसकी तरफ से सदका किया गया है या नहीं? واللہ اعلم

शैखुल इस्लाम كشف الغطاء عما للموتى على الاحياء फस्ले हशतम (आठवीं फस्ल) में फरमाते हैं:

در غرائب و خزانہ نقل کردہ، کہ ارواح مؤمنین می آیند خانہائے خود راہر شب جمعہ، وروز عید، وروز عاشورہ وشب برأت، پس ایستادہ می شوند بیرون خانہائے خود وندامی کنند ہر یکے بہ آواز بلند اندوہگیں۔ اے اہل واولاد من، ونزدیکان من مہربانی کنید برما بصدقہ الخ

(فصل احکام دعا وصدقہ، ص۲۶)

ग़राइब और खिज़ाना में मनक़ूल है की मोमिनीन की रूहें अपने घरों पर हर जुमे की रात, ईद के दिन, आशूरा के दिन, शबे बराअत को आती हैं और अपने घरों के बाहर गमगीन हालत में खड़ी होती हैं और हर एक को आवाज़े बुलंद पुकार कर कहती हैं ऐ मेरे अहले औलाद और मेरे करीबी रिश्तेदारों मुझ पर बराय मेहरबानी सदका करो।

इसी में है:

شیخ جلال الدین سیوطی رحمۃاللہ علیہ، در شرح الصدور احادیث ششی در اکثر ان میں اوقات آوردہ، اگرچہ اکثرے خالی از ضعف نیست۔

(فصل احکام دعا وصدقہ، ص۲۶

इस इबारत में अक्सर का लफ्ज़ सरीह दलालत कर रहा है कि बाज़ बिल्कुल ज़ोअफ से खाली हैं, यानी बाज़ ज़ईफ नही। तो साहिबे मेअतु मसाइल का मुतलक़न इस तरफ निस्बत करना की

این روایات راضعیف ہم فرمودہ اند

किज़्ब व इफ्तरा (झूठ और बोहतान) है या जहल व इज्तिरा, और इस्तिनाद का रिवायाते सहीहा मरफूआ मुत्तसिलतुल इस्तिनाद में हस्र और सिहाह का सिर्फ कुतुबे सित्ता पर क़सर जैसा के साहिबे मेअतु मसाइल से यहां वाक़ेअ हुआ जहले शदीद व सफहे बईद है

हदीसे हसन भी बिल इजमा हुज्जत है। गैर अकाइद अहकामे हलालो हराम में हदीसे ज़ईफ भी बिल- इजमा हुज्जत है, हमारे अइम्मा ए किराम हनफिया और जमहूर अइम्मा के नज़दीक है मुरसल गैर मुतस्सिल उल इसनाद भी हुज्जत है। हमारे इमामे आज़म रदि अल्लाहु तआला अनहु के नज़दीक हदीसे मौकूफ, गैर मरफूअ कौले सहाबी भी हुज्जत है के ये सब मसाइल अदना तालिबे इल्म पर भी रोशन हैं और हदीसे सहीह का उन 6 किताबों में महसूर न होना भी इल्मे हदीस के अबजद ख़्वानों पर बय्यन और मुबरहन है, तुरफा ये कि खुद साहिबे मेअतु मसाइल ने इस किताब और अरबाईन में और बुज़ुर्गाने खानदाने देहली जनाब मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब और शाह वली उल्लाह साहब ने अपनी तसानीफे कसीरा में तो वो-वो रिवायात गैरे सिहाह और रिवायात तबका ए राबेआ और उन से भी नाज़िल तर से इस्तिनाद किया है,जैसा कि किताबों के अदना से मुतालेअ़ से वाज़ेह व मुबय्यन है।

इमामे अजल अब्दुल्लाह बिन मुबारक और अबु बक्र बिन अबी शैबा उस्ताज़ बुखारी और मुस्लिम, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रदि अल्लाहु तआला अन्हुम से मौकूफन

और इमाम अहमद मुसनद और तबरानी मुअजमे कबीर और हाकिम सही मुसतदरक और अबू नुऐम हिलया में बा सनदे सहीह हुज़ूर पुर नूर सय्यदे आलम ﷺ से मरफूअन रावी:

وهذا لفظ ابن المبارک: قال ان الدنیا جنة الكافر و سجن المؤمن و انما مثل المؤمن حين تخرج نفسه كمثل رجل كان في سجن فاخرج منه فجعل يتقلب في الارض و يتفسح فيها۔

(کتاب الزهد لابن المبارک، باب فی طلب الحلال، حدیث ۵۹۷، ص ٦١١، بیروت)

यानी बेशक दुनिया काफ़िर के लिए बहशत और मोमिन के लिए क़ैद खाना है। जैसे कोई शख्स कैद खाने में था, अब उसे आज़ाद कर दिया गया, फिर ज़मीन में गश्त करने और बा-फरागत चलने फिरने लगा।

अबू बकर की रिवायत यूं है:

فإذا مات المؤمن يخلى به يسرح حيث شاء

जब मोमिन मरता है तो उसकी राह खोल दी जाती है के जहां चाहे जाए।

इब्ने अबी दुनिया व बहकी, सईद बिन मुसय्यब रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी, हज़रत सलमान फारसी व अब्दुल्लाह बिन सलाम बाहम मिले एक ने दूसरे से कहा कि अगर मुझसे पहले इन्तेकाल करो तो मुझे खबर देना कि वहाँ क्या पेश आया? तो पूछा, क्या ज़िन्दे और मुर्दे भी मिलते हैं? तो जवाब दिया:

نعم؛ اما المؤمنون فإن أرواحهم في الجنة و هی تذهب حيث شاءت

हाँ मुसलमानों की रूहें तो जन्नत में होती हैं, उन्हें इख्तियार होता है। जहां चाहती हैं, जाती हैं।

इब्नुल मुबारक किताब अज़-ज़ुहद और अबू बक्र अबी दुनिया और इब्ने मुन्दह, सलमान रदि अल्लाहू तआला अनहू से रावी:

قال ان ارواح المؤمنين في برزخ من الارض تذهب حيث شاءت و نفس الكافر في سجين

(كتاب الزهد لابن مبارک، باب ما جاء في التوكل ، حديث ۴۲۹، ص ۱۴۴)

यानी बेशक मुसलमानों की रूहें ज़मीन के बरज़ख में हैं, जहां चाहती हैं जाती हैं, और काफ़िरों की रूहें सिज्जीन में कैद हैं।

इब्ने अबी दुनिया, इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह से रावी:

قال بلغني ان ارواح المومنين مرسلة تذهب حيث شاءت

(شرح الصدور حواله ابن ابى الدنيا، باب مقر الارواح ص ۹۸)

यानी मुझे हदीस पहुंची है, कि मुसलमानों की रूहें आज़ाद हैं, जहां चाहती हैं जाती हैं।

इमाम जलालुद्दीन सुयूती फरमाते हैं:

راجح ابن البران ارواح الشهداء في الجنة و ارواح غيرهم على افنية القبور فتسرح حيث شاءت

इमाम अबु अम्र इब्ने अब्दुल बर ने फरमाया: राजेह ये है कि शहीदों की रूहें जन्नत में हैं, और मुसलमानों की रूहें फनाए कुबूर पर, जहां चाहती हैं जाती हैं।

अल्लामा मनावी तैसीर शरह जामेअ सगीर में फरमाते हैं:

إن الروح إذا انخلعت من هذا الهيكل وانفكت من القيود بالموت تجول إلى حيث شاءت

बेशक जिस वक़्त रूह कालिब (बदन) से जुदा होती है और मौत के बाइस कैदों से रिहा हो जाती है तो फिर जहां चाहती है, जोलां (गर्दिश) करती है।

काज़ी सनाउल्लाह साहब भी "तज़्किरतुल मौता" में लिखते हैं:

ارواح ایشاں (یعنی اولیائے کرام قدست اسرار ہم) از زمین و آسماں و بہشت ہر جا کہ خواہند میر وند۔

(تذ کرۃ الموتی والقبور، اردو ترجمہ مصباح النور، نوری کتب خانہ ۷۵،۷٦)

औलिया ए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम की रूहें, ज़मीन आसमानों और बहशत से जहां चाहती हैं चली जाती हैं, यानी आज़ाद फिरती हैं।

खिज़ानतुर रिवायात में है:

عن بعض العلماء المحققين ان الارواح يتخلص ليلة الجمعة و تنتشر فجاء وا الى مقابرهم ثم جاء وافي بيوتهم ۔

बाज़ उलामा ए मुहक़्किक से रिवायत है कि रूहें शब ए जुमा छुट्टी पाती हैं और फैलती (फिरती हैं) पहले वो अपनी कब्रों पर आती हैं, फिर अपने घरों में आती हैं।

दस्तूरुल क़ुज़ात मुस्तनद साहिबे मेअतु मसाइल में फतावा इमाम नसफी से है :

إن ارواح المومنين يأتون في كل ليلة الجمعة و يوم الجمعة فيقومون بفناء بيوتهم ثم ينادي كل واحد منهم بصوت حزين يا اهلى و يا اولا دى و يا اقربا نى اعطفوا علينا بالصدقة و اذكرونا ولا تنسونا وارحمونا في الخ

बेशक मोमिनों की रूहें हर शबे जुमा और जुमे के दिन,अपने घरों में आती हैं और दरवाज़े के पास खड़ी होकर दर्दनाक आवाज़ से पुकारती हैं कि ऐ मेरे अज़ीज़ो! हम पर सदके से

महर करो। हमें याद करो और हमें भूल न जाओ। हमारी गुरबत में हम पर तरस खाओ और रहम करो।

नेज़ खिज़ानतुर रिवायात मुस्तनद साहिबे मेअतु मसाइल में है :

عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما اذا کان یوم عید او یوم جمعة أو یوم عاشوراء اولیلة النصف من الشعبان تأتی ارواح الاموات ویقومون علی ابواب بیوتھم فیقولون ھل من احد یذکرنا ھل من احد یترحم علینا ھل من احدیذکر غربتنا الحدیث۔

यानी इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है, जब ईद या जुमा या आशूरा का दिन या शबे बराअत होती है, अमवात की रूहें आकर अपने घरों के दरवाज़ो पर खड़ी होती हैं और कहती हैं है कोई हमें याद करे? है कोई कि हम पर तरस खाए? है कोई कि हमारी गुरबत की याद दिलाए?

इसी तरह कंज़ुल इबाद में भी किताब उर रौज़ा इमाम ज़िंदवेसी से मंकूल: ये मसअला कि न अकाइद का है न फिक़्ह के एहकाम हलालो हराम का। ऐसी जगह दो एक सनदें भी बस (काफी होती हैं) न कि इस कदर कसीर और वाफर।

इमाम जलालुद्दीन सुयूती मनाहिल उस सफानी तखरीज अहदीस अश-शिफा ज़ेरे रसा अमीरूल मोमिनीन उमर फारूखे आज़म रदिअल्लाह तआला अन्हु फरमाते हैं:

لم اجده في شئ من كتب الاثر لكن صاحب اقتباس الانوار و ابن الحاج في مدخله ذكراه في ضمن حديث طويل و کفی بذلک سند المثله فانه ليس : مما يتعلق بالأحكام

यानी मैंने ये हदीस किसी हदीस की किताब में न पाई मगर साहिबे इक्तिबास उल अनवार और इब्नुल हाज ने अपनी किताब "मुदखल" में इसे एक हदीसे तवील में बेसनद ज़िक्र

किया। ऐसी हदीस के लिए इतनी ही सनद काफी है कि वो कुछ एहकाम से मुताल्लिक नहीं।

बाकी रहा मौलवी रशीद अहमद साहब गांगोही का ये कौल है कि अरवाह का अपने घरों में आना ये मसअला अकाइद का है, इसमें मशहूर और मुतवातिर सिहाह की हाजत है।क़तईयात का एतिबार है, न के ज़न्नियाते सिहाह का। यानी सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम की भी सहीह व सरीह हदीसों में हो की रूहें आती है तो वो हदीस भी उन के नज़दीक मरदूद होगी कि उन रिवायतों में अमल नहीं बल्कि इल्म है, और तस्लीम भी कर लिए तो फकत अमल है, न फज़्ले अमल, बराहीने कातेआ़

لما امر اللہ بہ ان یوصل

में चार वर्क से ज़ाइद पर यही आजूबा फैला हुआ है।

मैं कहता हूं: अगरचे हर जुमला खबर में जिस में किसी बात का ईजाब या सल्ब हो, अगरचे उसे नफयन या इसबातन किसी तरह अकाइद में दखल न होना नाफी या मुसब्बत किसी पर इस नफी और इसबात के सबब हुक्मे दलालत और गुमराही मुताहम्मिल न हो, सब बाबे अकाइद में दाखिल ठहरे जिस में अहादीसे बुखारी और मुस्लिम भी जब तक मुतवातिर न हो न मकबूल ठहरें, तो अव्वलन: सियरो मगाज़ी और मनाक़िब ये उलूम के उलूम सब गाओ खुरद वा दरिया बुर्द हो जाएं हालांकि उलामा तशरीह फरमाते हैं कि इन उलूम में सिहाह दर किनार, ज़ुआफ भी मकबूल।

सीरत इंसान उल उयून में है:

لا يخفى ان الشير تجمع الصحيح و السقيم والضعيف والبلاغ والمرسل والمنقطع والعضل دون الموضوع و قد قال الامام احمد وغيره من الائمة اذا روينا في الحلال والحرام شددنا و اذا روينا في الفضائل و نحوها تساهلنا

(انسان العيون ، خطبة الكتاب مصطفے البابی مصر ، ٣، ١/٤)

यह बात मखफी न रहे कि सीरत की किताबें, सहीह, सकीम, बलाग,मुरसल,मुनक़तेअ,मुअ़दल पर मुशतमिल होती हैं। इनमें मौज़ूआत नहीं होती हैं। इमाम अहमद बगैरह अइम्मा ने फरमाया कि हम हलालो हराम की रिवायत करते हैं तो सख्ती करते हैं और फज़ाइल बगैरह में तसामोह से काम लेते हैं

इस मबहस की तफ़सील फकीर की किताब " मुनीरुल ऐन फी हुक्मे तक़्वील उल इबहामैन" में मुलाहिज़ा हो। यही देखिए रसाए मज़कूर अमीरूल मोमिनीन क्या फज़ाइल ए आमाल से था वो भी बाब ए इल्म से है जिसमें ख़ातिमुल हुफ्फाज़ ने बाज़ उलामा की बेसनद हिकायत भी काफी बताई। 2: इल्मे रिजाल भी मर्दूद हो जाए कि वो भी इल्म है, न अमल। व फज़्ले अमल तो क़तईयात सब बातिलो मुहमल। 3: दो तिहाई से ज़ाइद बुखारी और मुस्लिम की हदीसें महज़ बातिल और मर्दूद क़रार पाएं। 4: अकाइद आमाल में तिफर्क़ा जिस पर इज्मा ए अइम्मा है, ज़ाऐ जाए, कि एहकाम ए हलालो हराम में किया एतिक़ाद ए हिल्लतो हुरमत नहीं लगा हुआ है, और वो अमल नहीं बल्कि इल्म है, तो किसी शय के हलाल और हराम समझने के लिए बुखारी और मुस्लिम की हदीसें मरदूद, और जब हलाल और हराम कुछ न जानें तो उसे क्यूँ करें, उस से क्यूँ बचें। 5: ब्लकि फज़ाइल ए आमाल में भी अहादीसे सहीहैन का मर्दूद होना लाज़िम। हालांकि इनमें ज़ईफ हदीसें भी खुद मकबूल मानते हैं। ज़ाहिर है कि इस अमल में ये खूबी है। इस पर ये सवाब,ये जानना खुद अमल नहीं बल्कि इल्म है और इल्म बाबे अकाइद से है और अकाइद में

सिहाह ज़न्नियात मर्दूद। 6: अगले साहिब ने तो इतनी मेहरबानी की थी,कि हदीसे सहीह मरफूअ, मुत्तसिल उस सनद मकबूल रखी थी, इन्होंने बुखारी और मुस्लिम भी मर्दूद कर दीं। जब तक क़तईयात न हों, कुछ न सुनेंगे।

ع قدم عشق پیشتر بہتر۔

7: खत्मे इलाही का समरह देखिए इस बराहीने कातेआ़

لما امر اللہ ان یوصل

में फज़ीलते इल्मे मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को बाब ए फज़ाइल से निकलवा कर उस तंगनाए एतिक़ादियात में दाखिल कराया, ताकि सहीहैन बुखारी और मुस्लिम की हदीसें भी जो वुसअत ए इल्म ए मुहम्मद ﷺ पर दाल हैं, मर्दूद ठहरें ,और वहीँ वहीँ उस मुहँ में मुहम्मद ﷺ के इल्म ए अज़ीम की तनकीस को एक महज़ बे अस्ल और बे सनद हिकारत से सनद लाए के शैख अब्दुल हक रिवायत करते हैं "के मुझ को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं"। हालांकि हज़रत शैख क़ुद्दसा सिर्रुहु ने हरगिज़ रिवायत न किया बल्कि एतिराज़ ज़िक्र कर के साफ़ फरमा दिया था कि

ایں سخن اصل نہ دارد و روایت بداں صحیح نہ شدہ است

ये बात बे अस्ल है और इसकी रिवायत पाया ए सहत तक नहीं पहुंचती।

गर्ज़ मुहम्मद ﷺ के फज़ाइल को तो जब तक हदीस ए क़तई न हो बुखारी और मुस्लिम भी मर्दूद और मआज़ अल्लाह हुजूर की तनकीसे फज़ाइल के लिए बे अस्ल और बे सनद, बे सरोपा हिकायत मकबूल और महमूद। और फिर दावा ए ईमान और अमानतो दीनो दयानत बदस्तूर मौजूद

انا للہ و انا الیہ راجعون کذلک یطبع اللہ علی کل قلب متکبر جبار بالجملہ

ये मसला न बाब ए अकाइद से है, न बाब ए एहकामे हलालो हराम से। इसे जितना मानना चाहिए उसके लिए इतनी सनदें काफी व वाफी, मुन्किर अगर सिर्फ इंकारे यकीन करे यानी उसपर जज़्म व यकीन नहीं तो ठीक है। और आम्मा ए मसाइल सियरो मगाज़ी और अखबार और फज़ाइल ऐसे ही होते हैं, इसके बाइस वो मर्दूद नहीं करार पा सकते। और अगर दावा ए नफी करे यानी कहे मुझे मालूम व साबित है कि रूहें नहीं आती,तो फिर वो झूठा और कज़्ज़ाब है। बिलफर्ज़ अगर उन रिवायतों से क़तए नज़र भी, तो गायत ये कि अदमे सुबूत है न सुबूते अदम और बे दलील अदम इद्दाए अदम महज़ तहक़्कुम और सितम। आने के बारे में तो इतनी कुतुब और उलामा की इबारात हैं, मगर नफी और इंकार के लिए कौन सी रिवायत है। किस हदीस में आया कि रूहों का आना बातिल और गलत है तो इद्दाए बे दलील बातिल और ज़लील। ये कैसी हटधर्मी है कि सिर्फ मुकाबिल पर रिवायात मौजूद, सिर्फ बर बनाए ज़ुअफ मर्दूद, और अपनी तरफ से न रिवायत का नाम और निशान और इद्दाए नफी का बुलंद निशान। रुहों का अगर बाब अकाइद से है तो नफियन और इसबातन हर तरह उस बाब से होगा और दावाए नफी के लिए भी दलील ए क़तई दरकार होगी या मसअला एक तरफ से बाबे अकाइद में है कि सिहाह भी मर्दूद और दूसरी तरफ से ज़रूरियात में है कि असलन हाजते दलील मफकूद।

وصلی اللہ علی خیر خلقه محمد واله وصحبه أجمعین امینه واللہ تعالی اعلم و علمه جل مجده و اتم و احکم کتبه
عبده المذنب احمد رضا بریلوی عفی عنه بمحمد ن المصطفی صلی اللہ تعالی علیه و آله وسلم۔

असली सूफी कौन?

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

दौरे हाज़िर में बाज़ लोगों ने तसव्वुफ और सूफी जैसे मुकद्दस अल्फ़ाज़ को उसके गलत इस्तेमाल की वजह से मजरुह कर दिया है। हालात यह हैं कि जिस शख्स को भी सफेद क़ुबा, ऊंची कुलाह[टोपी] और दराज़ गेसू [लम्बे बाल] से आरास्ता पाया उसको सूफी का लक़ब दे दिया जाता है हालांकि यह चीज़ें तसव्वुफ और सूफियत के लवाज़मात में से नहीं हैं।

यह तो मैंने एक इशारा दिया है कि आजकल लोग सूफी किसको गर्दान [समझ] रहे हैं। जो लोग सूफियत का लिबादा ओढ़कर अवाम को गुमराह कर रहे हैं अगर शरअ की रोशनी में उनके कामों का ज़ायज़ा लिया जाए तो लोग यह बर-जस्ता कह देंगे यह सूफी तो क्या, सही मायनों में मुसलमान भी नहीं हैं।

क्या आज का नाम निहाद सूफी अपनी महफिलों में शरीयत का कौलन या फेअलन [बातों या कामों से] मज़ाक नहीं उड़ा रहे ? क्या आज गैर महरम औरतों से नाम निहाद सूफी अपनी खिदमात के नाम पर बे हयाई नहीं फैला रहे? कहते हैं कि हम तरीक़त वाले हैं अरे जो शरीयत के शीन से वाकिफ ना हो वो तरीक़त तक पहुंचा कैसे?! क्या नमाज़ के वक्त अपने मुरीदों के साथ मज़ामीर पर रक़्स करने वाले नमाज़ को हल्का नहीं जान रहे? क्या ऐसे नाम निहाद सूफियों की नज़र मुरीदों के नज़रानों पर नहीं होती? मुरीदों को अपने क़दमों में सजदे की मानिंद झुका लेना और उन से अपने तलवे चटवाना ये कैसी सूफ़ियत है? सूफी वही है जो अल्लाह का बंदा बनाए अपना बंदा नहीं।

इसीलिए हमें चाहिए किसी साहिब ए शरियत, नेक स्वालेह इंसान के हाथ पर बैअत करें। कहीं ऐसा ना हो कि ये जाली सूफियों से बैअत करना आखिरत में ख़सारे का सबब बन जाए।

दस्तार के हर तार की तहक़ीक़ है लाज़िम

हर साहिब ए दस्तार मुअज़्ज़ज़ नहीं होता।

आइए जानते हैं कि तसव्वुफ क्या है? और सूफी किसे कहते हैं? इंशा अल्लाह असली सूफी और जाली सूफी में फर्क वाज़ेह हो जाएगा।

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इर्शाद फरमाया:

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ

(سورۃ الأعلی: ۱۴)

बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुआ

तसव्वुफ के ज़रिए तज़्किया ए नफ्स किया जाता है अपने अंदर की बुराइयों को ख़त्म करके अपने दिल को सुथरा किया जाता है ऐसे शख्स को अल्लाह तआला ने कामयाबी का मुजदा सुनाया और वही शख्स सूफी कहलाने के लायक़ है जो अपने नफ्स को पाक और साफ़ करले। मोमिन का क़ल्ब अल्लाह तआला का घर है इसमें बुराइयाँ नहीं होना चाहिए।

मुफ्ती आज़म ए हिंद ने फरमाया था:

हुब्बे सनम ए दुनिया से पाक कर अपना दिल

अल्लाह के घर को भी ज़ालिम किया बुतखाना।

तसव्वुफ की वजह ए तस्मिया:

तसव्वुफ सफा से मुशतक़ है सफा के मायने तश्फिया के हैं यानी क़ल्ब की सफाई, रूहानी ऐतबार से क़ल्ब को कदूरत [गंदगी] बगैरह से पाक करना। तो जो लोग इसमें मसरूफ रहते हैं उन्हें सूफी कहा जाता है।

तसव्वुफ सफ़वह से मुशतक़ है जिस का मायना सिफात के साथ मुत्तसिफ होना है,यानी इंसान का कमालात से मुत्तसिफ होना तो इस वास्ते इस किरदार को तसव्वुफ से ताबीर किया जाता है। बाज़ हज़रात इसकी निसबत असहाब ए सुफ्फा की तरफ करते हैं।

तसव्वुफ की तारीफ़:

التصوف علم يعرف به أحوال النفس محمودها ومذمومه، وكيفية تطهيرها من المذموم منها، وتحليتها بالاتصاف بمحمودها، وكيفية السلوك والسير إلى الله تعالى

तसव्वुफ वो इल्म है कि जिस की वजह से नफ्स के हालात को पहचाना जाता है कि उस की हालत महमूद है या मज़मूम, फिर मज़मूम हालत को पाक करने की कैफ़ियत क्या है? इसका जानना,फिर उस नफ्स को अच्छी सिफात के साथ मुत्तसिफ कैसे करना है? इसकी पहचान, फिर नफ्स को साफ़ करने के बाद अल्लाह तआला की तरफ सफर कैसे किया जा सकता है? इस तरीके को पहचानना, इस मजमूयी किरदार को तसव्वुफ कहते हैं।

लफ्ज़े तसव्वुफ दूसरी सदी हिजरी में मुतआरिफ हुआ, तसव्वुफ के निसाब में मजमूयी तौर पर तीन चीज़ें हैं।

اوله علم و هذا عمل و آخره موهبة

यानी पहले इल्म है दूसरे नंबर पर अमल है और तीसरे नंबर पर इस अमल पर मुरत्तब होने वाला अल्लाह का फज़्ल है।

इमाम मालिक ने इल्म ए दीन और तसव्वुफ के ताल्लुक़ से एक बहुत बेहतरीन बात फरमाई है फरमाते हैं :

من تصوف ولم يتفقه فقد تزندق ، ومن تفقه ولم يتصوف فقد تفسق ، ومن جمع بينهما فقد تحقق

जो सूफी तो बने और इल्मे दीन हासिल न करे तो हो सकता है वो ज़िनदीक़ बन जाए इसी तरह जो इल्मे दीन तो पढ़े मगर तसव्वुफ की तरफ माइल न हो तो हो सकता है वो फासिक़ बन जाए और जो दोनों को जमा करें तो वो हक़ीक़त को पा लेता है।

सय्यदुत-ताएफा हज़रत जुनैद बग़दादी फरमाते हैं:

मखलूक़ के लिए अल्लाह की तरफ जाने वाले सारे रास्ते बंद हैं सिर्फ उसके लिए खुलते हैं जो सुन्नत ए नब्वी की पैरवी करता है।

जो ये चाहे कि सुन्नत को छोड़ कर सूफी या वली बन जाए खुदा-रसीदा बन जाए तो हज़रत जुनैद बग़दादी जो कि सूफियों के सालार हैं फरमाते हैं उसको कभी रास्ता नहीं मिलेगा भटकता फिरेगा। और यहाँ हाल ये है कि चेहरे सुन्नत ए नब्वी के नूर से खाली हैं और कहलाते हैं सूफी, खुराफात और बिदआत के दाई है और कहलाते हैं सूफी, नमाज़ों पर नमाज़ें तर्क हो रही हैं और कहलाते हैं सूफी।

हज़रत अबू हफ्स रदिअल्लाह अन्हू फरमाते हैं:

जो शख्स रोज़ाना अपने मामूलात को कुरआन और सुन्नत के साथ वज़न नहीं करता यानी अपने मामूलात को कुरआन और सुन्नत पर पेश नहीं करता तो उसका नाम वलियों के रजिस्टर में नहीं लिखा जाता है।

इसलिये वली या सूफी वही है जो अपने आमाल और अहवाल को कुरआन और सुन्नत के सामने रखकर चेक करता है कि क्या वाक़ई कुरआन और सुन्नत ने मेरे उन कामों की ताईद की है या नहीं?

सूफी के लिए जो चीज़ें लाज़िम हैं उस को हज़रत सिरि सकती रहमतुल्लाह अलेह ने बड़े अहसन अंदाज़ में बयान फ़रमाया है फरमाते हैं:

सूफी के लिए तीन चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं

- सूफी के लिए मारिफत का नूर उसकी परहेज़गारी के नूर को बुझा नहीं सके।(यानी मारिफत आए और परहेज़गारी चली जाए तो सूफी नहीं।)
- वो कोई ऐसी बातिनी बातें न छेड़े जिसको ज़ाहिरे कुरआन रद्द कर रहा हो (अगर ऐसे कोई मखफी असरार नज़र आ रहे हैं तो उसे कुरआने मजीद पर पेश करे अगर कुरआने करीम उनकी हिमायत करे तो उसको बयान कर दे वरना उसको तर्क कर दे)
- उसकी करामात अल्लाह की हराम-करदा चीज़ों के पर्दों को फाड़ना शुरू न कर दें। अगर इन तमाम चीज़ों की पाबंदी कर सकेगा तो सूफी कहलायेगा।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी अपने दोस्तों में ये फरमाने लगे अगर किसी शख्स को तुम देखो कि उसको इतनी करामात दी गई हैं कि वो हवा में उड़ रहा है इस से ही उसके फरेब में न आ जाओ यहां तक कि तुम ये न देख लो कि उसका मुआमला अल्लाह के अम्र और नही के साथ क्या है? यानी अल्लाह ने जो करने का उसको हुक्म दिया क्या वो उस पर अमल करता है और जिन चीज़ों से उसे मना किया क्या उनसे बाज़ रहता है? और उसकी शरियत की पाबंदी और हुदूद उल्लाह की हिफाज़त पर नज़र करो जब ये खूबियां पाई जाएं तो यही असली सूफी है।

आजकल एक चीज़ और सामने आ रही है वो ये कि बाज़ सूफी हज़रात कहते हैं कि हमारे पास आकर रूहानियत हासिल करो अगरचे तुम्हारा ताल्लुक किसी भी मज़हब से हो। इनके पास यहूदी हो की ईसाई हो ख्वाह हिन्दू हो सबका आना जाना है।

ये कैसी रूहानियत है कि बगैर इस्लाम के आ जाए? रूहानियत कोई माजून है कि कोई किसी मसलक से भी आ जाये आप उसे दे देंगे। अगर कोई कहे कि मैं ऐसा सूफी हूं कि न मैं किसी मसलक का इज़हार करता हूं और न मेरा ताल्लुक़ किसी मसलक से है, मैं सबका हूं, मैं सब फिरक़ों को एक नज़र से देखता हूं। तो ऐसे सूफी की रूहानियत और उसके तसव्वुफ के लिये इस्लाम में कोई जगह नहीं।

शरियत ए इस्लामिया का ऐसे तसव्वुफ से कोई ताल्लुक़ नहीं ऐसे लोगों को मुजद्दिद अल्फे सानी के एक मकतूब से सबक लेना चाहिए:

फरमाने लगे अगर मेरे मुरीद, मेरे मानने वाले दूसरे लोग हर कमाल मेरा बयान कर दें, मेरे मवाजीद, मेरी हालतें, मेरी कैफियतें, मेरी करामतें बयान करें मगर मुझको सुन्नी न कहे तो उन्होंने मेरी खराबियों के अलावा कुछ बयान नहीं किया। और अगर तमाम खराबियां मेरे ऊपर जमा करके मुझको सुन्नी कहें तो मैं समझुंगा कि कोई मेरा नुकसान नहीं हुआ है।

मज़कूरा वाकये से हमें ये सबक मिलता है कि सूफी के लिए सुन्नी होना पहली शर्त है। अगर वो अहले सुन्नत व जमाअत के मसलक को मज़बूती से थामे हुए है तो आगे के मराहिल तय कर सकता है वरना नहीं।

नतीजा ए कलाम ये है कि असली और जाली सूफी को परखना है तो उसे कुरआन और सुन्नत की तालीमात की रोशनी में परखों और जो लवाज़मात सूफी के लिए ऊपर जिक्र किए गए हैं उसके अंदर तलाश करो। अगर कोई इसका हामिल मिले तो यकीनन वो

असली सूफी है और अगर इसका हामिल न पाओ तो सिर्फ वो दावा ए सूफियत करता है अगरचे ज़ाहिरी सूरत सूफियों जैसी ही क्यूँ न हो वो सूफी नहीं हो सकता। वो अवाम के लिये भेड़िये के मानिंद है और असली सूफियों के नज़दीक वो मक्खी की मानिंद है। उससे खुद भी बचो और लोगों को भी बचाओ ताकि लोगों की दुनिया और आखिरत बर्बाद न हो। अल्लाह हमें सही और गलत में तमीज़ की तौफीक़ अता फरमाए, अल्लाह हमारा हामी ओ नासिर हो।आमीन!

मुआशरे में बढ़ती बेराहरवी: एक लम्हा ए फिकरिया

:मुहम्मद फैज़ान रज़ा अलीमी

ख़ालिक़े कायनात ने इस ख़ाकदाने गेती पर बेशुमार मख़्लूकात को पैदा किया और हर एक की पैदाइश का कोई न कोई मक़सद रखा है उसके जीने के तौर तरीकों को भी उसके रहन-सहन के ऐतबार से तय किया है अब अगर कोई मखलूक अपनी मक़सदे तख़्लीक़ से हटकर कोई अमरे बद अंजाम देने लगे तो उसको बेराहरवी का शिकार समझा जाएगा। और यह कहा जाएगा कि यह अपने मकसद से हट चुकी है। मसलन सूरज का काम दिन में रोशनी देना है और चांद का रात में चांदनी देना, तो बिलफर्ज़ अगर सूरज अपना काम रात में करने लगे और चांद दिन में तो दुनिया तबाह और बर्बाद हो जाएगी। इसी तरह आफताब रोज़ाना पूरब से निकलता और पश्चिम में डूबता है और चांद मगरिब से निकलता और मशरिक में डूबता है लेकिन यही अगर अपने निकलने की जगह को पलट दे तो कयामत बरपा हो जाएगी। यूं ही अल्लाह, खालिके अर्ज़ो समा की तख़्लीक़ात में से अशरफ उल मख़्लूकात की हैसियत रखने वाले इंसान की तख़्लीक़ का भी खास मकसद है और इसके भी उसूल और ज़वाबित और क़वानीन हैं जिसको मालिके हकीक़ी और उसके प्यारे हबीब मुहम्मदह ﷺ ने उजागर कर दिया है। अब अगर कोई इसके खिलाफ वर्ज़ी करता है तो अपनी मकसद ए तख़्लीक़ से अलग हटने वाला शुमार किया जाएगा और कहा जाएगा कि वो बे राहरवी का शिकार हो चुका है। ज़ेल के सतरों में इंसानी मुआशरे की बढ़ती हुई बे राहरवी का जायज़ा लिया जाएगा और उसके असबाब और इलल पर गौर कर के उसके सद्देबाब के लिए एक बेहतरीन लाहे अमल तैयार किया जाएगा।

"وماتوفیقی الاباللہ"

हया का फुक़दान और उसके असबाब और इलल:

मुआशरती उमूर पर निगाह रखने वाले यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि इस वक्त हमारा मुआशरा कितनी तेजी से बेराहरवी की तरफ गामज़न हो रहा है जिसकी बुनियादी वजह हमारी नौजवान नस्ल से हया के तसव्वुर का खत्म होना है। किसी मुआशरे को बस्ती के निचले हिस्से पर देखना हो तो उसके अंदर से हया जैसी पाक़ीज़ा शैय को निकाल दीजिए फिर देखिए उस कौम का हाल क्या होता है और आज हमारे साथ भी यही किया जा रहा है इस्लाम मुखालिफ ताकतें हमारे नौजवानों को हया जैसी मुकद्दस चीज़ का गलत मतलब बता रही हैं।

हमारे नौजवान नस्ल को हया का मतलब यह समझाया जाता है कि नज़रों में हया होनी चाहिए, हया निगाहों से होती है, इसकी हिफाज़त करो वगैरह-वगैरह इस तरह इन्हें हया के सही मफहूम से गाफिल रखा जाता है; इस तरह की बातें बता कर उन्हें मुकम्मल आज़ादी का परवाना पकड़ा दिया जा रहा है कि अब वह जो चाहे करें, और जो चाहे सोचे या समझे, सिर्फ नजरों में हया होनी चाहिए। जबकि पैग़ंबरे इस्लाम अलैहिस्सलाम की तालिमात यह है कि जहां हया नहीं होती वहां ईमान का निस्फ नहीं होता, हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ ने हया को निस्फे ईमान बताया और आज लोग सिर्फ नज़रों में हया को मुन्हसिर कर दिए हैं और हाल यह है कि इसकी आड़ में नौजवान तबक़ा ऐसी ऐसी रज़ील हरकत कर जाता है कि जिसका तसव्वुर भी नहीं होता। हया तो ऐसा वस्फ है कि जितना ज़्यादा हो खैर ही बढ़ाता है। बिलाशुबह नूरे ईमान जितना ज़्यादा होगा शर्म और हया भी उसी कदर परवान चढ़ेगी। आका करीम ﷺ ने फरमाया: हया ईमान से है।

(مسند ابی یعلیٰ، جلد ٦، صفحہ ٢٩١، حدیث ٧٤٦٣)

वह लोग जो मखलूत महफिलों (जहां मर्द और औरत में बेपर्दगी होती है) मुकम्मल बदन न ढापने वाले लिबास, रोशन ख्याली और मादर पिदर आज़ादी को जिद्दत और तरक्की का ज़ीना समझ कर उन्हें फरोग देते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि उनमें नूरे ईमान कितना कम हो गया है

و العیاذ باللہ تعالیٰ!

बे हयाई और बेपर्दगी इस कदर आम हो गई है कि हया वाले शख्स को ऐबदार, दक़्यानूसी खयालात का हामिल समझा जाता है। और अगर हमारी औरतें और बच्चियां हया करती हैं तो इसको दादी अम्मा, बुढ़िया, उस्तानी जी, और पुराने ख्याल की औरतें कहा जाता है, यही नहीं बल्कि वो अगर किसी प्रोफेशनल प्रोग्राम में बापर्दा चली जाएं तो खुद औरतें उनको तहकीर और तज़लील की नजर से देखती हैं और हौसला शिकन जुमलो से पुकारती हैं।

इस के असबाब और इलल पर अगर निगाह डाली जाए तो मुआशरे में बे हयाई आम करने का सब से बड़ा सबब सोशल मीडिया पर दिखाए जाने वाले ड्रामे और इस्तिहारात हैं जिनके ज़रिए गलत बातों को इस तरह पेश किया जा रहा है कि वह सही मालूम होती हैं। अभी हालिया दिनों में इर्तगल गाज़ी नामी ड्रामा और सीरियल तो इसमें और बड़ा किरदार निभा गया है। यह ड्रामेबाज़ लोग इस तरह से बेपर्दगी को पेश करते हैं कि ऐसा मालूम होता इस्लाम के सच्चे दाई और मुबल्लिग यही हैं। जबकि पड़ोसी मुल्क की सीरियल्स का भी इसमें कलीदी किरदार है।

बे हयाई और बेपर्दगी का दूसरा सबब मौजूदा स्कूल और कॉलेजेज़ हैं कि यह अब मगरिबी तहज़ीब और सकाफत के पैरोकार हो गए हैं और अपने आप को उसी कल्चर में ढालना बाइसे फख्र समझने लगे हैं यहां चाहे जितना आला खानदान और कबीले की बच्चियां

पढ़ने जाती हैं दो-चार महीने नहीं होते कि उसके सर से दुपट्टा उतर जाता है। दुपट्टा जो कल तक उसकी इज़्ज़त का सामान था आज वही उसको खराब लगने लगता है। लड़के लड़कियों का इख्तिलात, आला तहज़ीब याफ्ता होने का सबब लगने लगता है। अभी हालिया दिनों में झारखण्ड के एक कॉलेज में एक लड़की बुर्का लगाकर अपना सर्टिफिकेट और इनाम लेने गई तो उसे इसलिए रोक दिया गया कि तुम नकाब में आई हो पहले उसे उतारो उसके बाद मिलेगा लेकिन सलाम हो उस बच्ची पर कि उसने खाली हाथ वापस आना तो गवारा किया लेकिन अपने पर्दे को बेनकाब नहीं किया।

इसका तीसरा सबब हमारे मुआशरे की शादी है इसमें आए दिन ऐसे ऐसे गलत और इस्लाम मुखालिफ रुसूम अदा किए जा रहे हैं जिसको देख और सुन कर बड़ा अफसोस होता है। कभी गीत के नाम पर, कभी हल्दी के नाम पर, तो कभी मेहंदी के नाम पर, जवान लड़कियां यकजा होती हैं और बगैर किसी पास लिहाज़ के खूब मस्त होकर सारे रुसूम अदा करती हैं जबकि अक्सर लड़कों के लिए गैर महरम होती हैं। अब तो इसमें इस कदर बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया जाता है जैसे यह गलत है ही नहीं और अगर कोई बचना भी चाहती है तो जबरदस्ती उसको उसमें मुलव्विस करने की कोशिश की जाती है। यही नहीं बल्कि ऐसी तक़रीब में दूसरे नौजवान लड़के बगैर किसी रोक टोक के शामिल होते हैं।

ऐसी खातून जो फैशन और तरक्की के नाम पर बेपर्दा घूमती है उसके मुताल्लिक क्या खूबसूरत पैगाम दिया है मोहतरम तस्लीम रज़ा साहिब ने अपने तस्लीमात प्रोग्राम से "किसी खातून के बा'हिजाब होने का मतलब यह नहीं कि उसको बेहतरीन लिबास ज़ेबतन करना और सजना संवरना, अराइश करना नहीं आता बल्कि वो जानती है कि क्या पहनना है, कहां पहनना है, और किसके लिए पहनना है।?"

उनका एक एक जुमला हमारी बच्चियों और औरतों को दावते गौरो फिक्र दे रहा है और अपने हाले ज़ार पर सोचने समझने की तरगीब भी।

ज़िना बिलजब्र और ज़िना बिर्रज़ा का बढ़ता चलन:

इस मुआशरे में अब ज़िना की यह दोनों क़िस्में आम हो गई है और अगर नज़रे गाइर से देखा जाए तो ज़िना बिलजब्र के मुकाबले में ज़िना बिर-रज़ा का चलन ज़्यादा आम हो रहा है। इसमें ज़्यादातर शादीशुदा मर्द और खातून मुब्तिला पाए जाते हैं। इस दौरे पूर फितन में एक सबसे बड़ी वजह ज़िना बिर-रज़ा कि यह है कि मर्द चार-चार, पांच-पांच साल अपनी बीवी को छोड़कर अरब ममालिक में कसबे मुआश करता रहता है और यहां औरत एक दूसरे लड़के के साथ हर रोज़ बदकारी में मुब्तिला रहती है। इसका एक आसान तरीका अब यह अपनाया जा रहा है कि लड़की अपने घर से तन्हा बाज़ार करने के नाम पर निकलती है और अपने आशिक को बुला कर भाड़े वाला कमरा लेकर अपनी हवस की प्यास मिटाती है यहां तक देखा और सुना गया है कि जिस घर में कोई मर्द नहीं होता उस घर की फहाश औरत, गैर महरम मर्दों के साथ रात रात भर गुज़ारती है और खूब मगन रहती है। जबकि इस मामले में शादीशुदा और गैर शादीशुदा बराबर की शरीक हैं।

ज़िना बिर-रज़ा का चलन इस तौर पर भी आम हो रहा है कि अब स्कूल कॉलेज में लड़कियां अपने घर से कोसों दूर असरी तालीम हासिल करने के लिए जाती और वहां किसी लड़के से पहले दोस्ताना ताल्लुकात कायम करती हैं फिर उसके झांसे में आकर उसके साथ अपनी खुशी से अमरे बद को अंजाम देती हैं अलबत्ता इस में अभी भी मुतावस्सित का मामला है।

अगर ज़िना बिर-रज़ा के मामले में हम लड़कों की बात करें वो भी बराबर के शरीक हैं कि ऐसा नहीं कि सिर्फ लड़की उसके करने पर राज़ी होती और लड़का मजबूर बल्कि यह भी उतना ही खुश होता है और बराबर का शरीक भी है।

ज़िना बिल-जब्र की बात की जाए तो उसमें मुआशरे के बेहूदा और कमीने किस्म के लड़के और लड़कियां ज़्यादा मुलव्विस देखने को मिलते हैं। ज़िना बिल-जब्र ज़्यादातर गैर मज़हब के लड़के मुस्लिम लड़कियों से करते हैं।

शरई तौर पर अगर हम दोनों क़िस्मों की बात करें तो दोनों में बड़ी तफरीक़ मिलती है।

ज़िना बिर-रज़ा के मुताल्लिक यह हुक्म है कि दोनों अगर कुंवारे हों तो हद कायम की जाएगी और अगर शादीशुदा हैं तो संगसार किया जाएगा,और अगर ज़िना बिल-जब्र का सुदूर हो रहा है तो उसमें देखा जाएगा जाबिर कौन है और मजबूर कौन, जाबिर पर हद्दो-संगसार हसबे मरातिब लाहिक होंगे और मजबूर माफ किया जाएगा। तफसीली मालूमात के लिए कुतुबे फिक़्ह की तरफ रुख करें।

नाफरमानी ए वालिदैन की कसरत:

वालिदैन की अज़मत और रिफअत और उनकी बुलंदी ए मरातिब का क़सीदा कुरआन गाता है और मुस्लिम उम्माह को इसका दर्स देता है कि अपने वालिदैन की इज़्ज़त और अज़मत करो, उनके साथ अच्छा सलूक करो, उनका कहना मानो, उनको उफ तक ना कहो वगैरह-वगैरह। इस्लामी तालीमात तो यहां तक है कि अपने वालिदैन के दोस्तों के साथ भी बेहतर सलूक करो लेकिन ज़माने ने हमें ऐसा दिन दिखाया कि आंखें अश्कबार और दिल मुज़तरब होता जा रहा है। वालिदैन की क़दरो मनज़िलत की जैसी तालीम मज़हबे इस्लाम में है और किसी मज़हब और धर्म में नहीं इसके बावजूद मुआशरे में उनकी

बे-तौक़ीरी के मामलात बढ़ते जा रहे हैं आए दिन देखने सुनने में आता है कि आज उसके बेटे ने अपने बाप को मारा पीटा है तो कल उसके, हाल यहां तक हो गया है कि उसी बाप के बनाए हुए घर में रहने वाला बेटा अपने मगन होकर खाता पीता और मां-बाप भूखे सोते हैं। मैंने कुछ ऐसे नाहन्जार को यहां तक कहते हुए सुना है कि तुम ने मुझे पैदा ही क्यों किया है। और गाली तो ऐसी ऐसी के दिमाग खराब हो जाता है।

"العیاذ باللہ"

इसके असबाब और इलल को अगर तलाश किया जाए तो दो चंद बातें बड़ी मालूम होती हैं एक तो यह कि उसने अपने बच्चों को दीन और तालीमे दीन से बिल्कुल दूर रखा और दुनियावी तालीम भी वो नहीं दे सका जो देना चाहिए। जब उसने कभी मां बाप की क़दरो मनज़िलत के बारे में कुछ पढ़ा ही नहीं तो क्या जाने कि उनको कैसे रखा जाए?, उनके साथ कैसा बर्ताव किया जाए? वगैरह वग़ैरह। दूसरी वजह यह समझ में आती है कि इस तरक्की याफ्ता दौर में लोग अपने बाप और मां को अपने कल्चर में ढालने की कोशिश करते हैं और वह बेचारे अपने पुराने रीति रिवाज को अपनाएं रहते है जिससे उसके बच्चों को समझ में आता है कि मेरी इज़्ज़त मेरे वालिदैन की वजह से घट रही है लिहाज़ा वह उनको अपने से दूर रखने का फैसला कर लेते हैं। बे-तौकीरी कि एक वजह और मालूम होती है सास-बहू का झगड़ा जिसमें मेरी मालूमात के एतिबार से दोनों बराबर की शरीक हैं लेकिन बेटा अपनी बीवी की सुनकर मां बाप को अलग कर देता है यह एक अफसोस नाक अम्र है।

सद्देबाब के लिए चंद तजाबीज़:

मुआशरे में बढ़ती बेराहरवी की रोकथाम के लिए पूरी उम्मते मुस्लिमां को इस्लामी तालीम को फरोग देना होगा। इसके बगैर कोई चाराए कार नज़र नहीं आता है।

(1) हया जैसी पाक़ीज़ा शैय का सही मफहूम उम्मत के नौजवानों को बताना होगा इसके लिए हमारे उलामा और तलवा अपने-अपने हल्का ए अहबाब में कोशिश करें।

(2) ज़िना जैसी नासूर बीमारी और इंसानियत सोज़ जराइम से बचने के लिए इस पर नाज़िल होने वाली वईदें और मुआशरती खराबियों को ज़्यादा से ज़्यादा उजागर करना होगा और एक कामिल और बेहतर मुआशरा बनाने के लिए चंद बा'हिम्मत और नेक इंसानों को मैदान में आना होगा। जो घर और जो मर्द ऐसी हरकत में मुलव्विस मिले उससे क़तअ ताल्लुक और दूरी पूरा समाज करें।

(3) वालिदैन की नाफरमानी की वारदात में आए दिन इज़ाफ़ा हो रहा है इसलिए हर वालिदैन को सोचना होगा कि उनसे कमी कहां रह गई है? और जिनके बच्चे अभी छोटे हैं वह दीनी तालीम लाज़िमन दिलवाएं और अपने घर में दीनी माहौल पैदा करें। साथ ही अपने वालिदैन के साथ बेहतर से बेहतर सुलूक करें कि बच्चे जो देखते हैं वो ज़्यादा सीखते हैं और आप जैसा करोगे बच्चे वैसा ही तअस्सुर भी लेंगे। जैसा कि एक मशहूर मक़ूला है "जैसी करनी वैसी भरनी।"

(4) वालिदैन को चाहिए कि अपने बच्चे और बच्ची को खुद स्कूल छोड़ दिया करें और खुद लाएं। ऐसे हालात में जब के बच्चे बच्चियों के साथ बड़ी दरिंदगी का सुलूक किया जा रहा है, मस्ख शुदा लाशें मिल रही हैं। जराइम पेशा अफराद के अंदर से कानून के मुहासबे का खौफ खत्म हो गया है और साथ ही बच्चे और बच्चियों की बेराहरवी और गलत जानिब बढ़ते कदम में रोज़ ब रोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है ऐसे में स्कूल कॉलेज खुद से छोड़ना और लाना एक बड़े खतरे से महफ़ूज़ करना है इसलिए इसमें पहल करना चाहिए।

(5) हमारे मुआशरे के बाअसर अफराद को चाहिए कि मेराज ए इंसानियत के तहत कोई अजनबी जो किसी बच्चे/बच्ची को किसी वीरान इलाके या खाली घर की तरफ ले जाते

हुए दिखे तो अपनी जुर्रत और कुव्वते ईमानी का सुबूत दें और पूंछे कि तुम कौन हो? इस बच्चे या बच्ची से तुम्हारा क्या रिश्ता है? कहां ले जा रहे हो? याद रखें आपके इस कदम से बहुत सारे बच्चे बच्चियों की जान और इज़्ज़त और इफ्फत बच जाएगी।

(6) इंटरनेट और मोबाइल फोन के इस्तेमाल ने न सिर्फ नई नस्ल के अख़्लाक़ियात बर्बाद किए हैं बल्कि नौजवानों को जराइम की तरफ भी रागिब किया है। यहां तक के बाज़ औकात तालीम याफ्ता और खुशहाल घरानों से ताल्लुक रखने वाले नौजवान लड़के और लड़कियां ऐसी हरकात के मुरतकिब होते हैं जिसका तसव्वुर भी रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी होता है इसलिए वालिदैन और गार्जियन ज़िम्मेदारी निभाने वाले अफराद को चाहिए अपने बच्चों और बच्चियों के मोबाइल पर गहरी नज़र रखें और गाहे-बगाहे उनके मोबाइल को चेक करते रहें। इसके लिए आपको पहले ऐसा माहौल बनाना होगा फिर उनको बाखबर करना होगा कि उनका मोबाइल घर का कोई भी फर्द कभी-कभी चेक कर सकता है। इससे बहुत हद तक वह बदकारी और बुराई जो मोबाइल की पैदा शुदा है उससे कंट्रोल हो सकता है।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हमारे मुआशरे की बेराहरवी को दूर नुफ़ूर कर दे और इसके लिए हमने जो तजाबीज़ पेश की हैं उस पर अमल की तौफीक़ बख्शे।

आमीन

इत्तेहाद कितनी बड़ी ताक़त

:शम्स तबरेज़ खाकी ज़हूरी बिलगिरामी

इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक फ़ौलादी कुव्वत और ताकत है। माज़ी की कोई भी तारीख उठा कर देख ली जाए तो जिस काम में भी इत्तेहाद और इत्तेफाक रहा है, उसमें फतह और नुसरत ने कदम चूमे हैं।

वालिदा मोहतरमा इत्तेहाद और इत्तेफाक के हवाले से बराए नसीहत और इस्लाह बचपन में कारआमद कहानियाँ सुनाया करती थीं। एक बार बड़ी उम्दा गुफ़्तगू फरमाई और फरमाया: कि दो बिल्लियां थी और उन के दरमियान मोहब्बत और उखुव्वत का चिराग हमा वक़्त रोशन रहा करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उन दोनों में से एक को कहीं रोटी का टुकड़ा मिला और शिद्दत ए भूख की वजह से वो उस टुकड़े हो तन्हा खाना चाहती थी, लेकिन दूसरी बिल्ली का ये कहना था कि उस टुकडे को दो हिस्सों में तकसीम किया जाए और मुझे भी उसका एक हिस्सा दिया जाए। मगर वो बिल्ली उस पर राज़ी ना हुई और उनके दरमियान खाने को लेकर तनाज़ा हो गया कुछ ही लम्हा में लड़ाई ने इस तरह से मोहब्बत को नफरत में बदला की दोनों सालहा साल की उखुव्वत और मोहब्बत ही को फरामोश कर बैठीं।

वालिदा मोहतरमा ने वाकिये को लंबा करते हुए कहा: कि अचानक एक बंदर उन दो बिल्लियो के दरमियान आया और उस रोटी के टुकड़े को झपट कर खा जाता है, और बेचारी बिल्लियां कफे अफसोस मलते रह जाती हैं।

क़ारईने किराम इस वाकिये से सबक ये मिलता है कि अल्लाह तआला की ज़ात देने वाली है जो एक टुकड़ा दे सकता है वो मज़ीद रिज़्क़ का भी बंदोबस्त कर सकता है।

इसलिए इंसान को अल्लाह तआला की ज़ात पर कामिल एतिमाद रखना चाहिए। और अगर कभी किसी चीज़ में हमारा दोस्त हमें हिस्सेदार न बनाए तो हमें झगड़ा करके इत्तेहाद और मोहब्बत के संगम को तोड़ना नहीं चाहिए क्यूंकि जब हमारे दरमियान इन्तेशार पैदा हो जाता है तो तीसरा शख्स उसका भरपूर फायदा उठाता है और हम जिन्दगी भर पछताते रहते हैं।

कुरआने पाक में है:

"فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ"

[طه: 123]

जिसने मेरी हिदायत की इत्तिबा की वो गुमराह नहीं होगा और ना ही बदबख्त होगा।

अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में मुताअद्दिद मक़ामात पर इत्तेहाद और इत्तेफाक़ के बारे में हुक्म फरमाया है।

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि वो मुत्तहिद रहें। ताकि अल्लाह और रसूल (जल्ला जलालुहू व अलैह सलाम) के फरमान के हिदायात की इत्तिबा कर सकें।

इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक के हवाले से कुछ आयात मनदरजा ज़ेल हैं।

कुरआने मजीद में है:

"وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ"

(سورہ آل عمران، آیت:103)

तर्जुमा: सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और तिफर्के में ना पढ़ो अल्लाह के उस एहसान को याद रखो जो उसने तुम पर किया है तुम एक दूसरे के दुश्मन थे उसने तुम्हारे दिल जोड़ दिए और उसके फ़ज़लो करम से तुम भाई भाई बन गए, तुम आग से भरे हुए एक गढ़े के किनारे खड़े थे,अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह अपनी निशानियां तुम्हारे सामने रोशन करता है शायद कि इन अलामतों से तुम्हें अपनी फलाह का सीधा रास्ता नज़र आ जाए।

इख्तेलाफ और इन्तेशार बहुत बड़ी बला है मज़कूरा आयत से इस बात का साफ तौर से इन्किशाफ होता है जिसको समझने की दौरे हाज़िर में अशद जरूरत है क्योंकि बातिल फिरके दीन और ईमान पर डाका डालने की मुहिम चला रहे हैं इससे यह हवा इस वक्त और तेज़ हुई है जब से हमने इस रस्सी को छोड़ दिया है जिस रस्सी को मज़बूती से पकड़ने का हुक्म अल्लाह दे रहा है। एक वक्त था जब हम एक दूसरे की जान के दुश्मन थे लेकिन अल्लाह ने हमारी हालातों पर रहम फरमा कर हम पर एहसान फरमाया और हमारे दिलों से बुग्ज़ अदावत निकालकर मोहब्बत और उखुव्वत के चिराग रोशन किए, और हम जो एक दूसरे के खून के प्यासे थे, उसने उसी दिल में भाईचारगी, दर्द पैदा किया, जाहिर सी बात है जब हमारे दरमियान इख्तेलाफ और इन्तेशार होगा तो हमारा ही खसारा है। लेकिन अल्लाह तआला ने इस अज़ीम खसारे से हमें बचा लिया फिर उसने अपनी निशानियां ज़ाहिर फरमाई ताकि हम उससे कुछ सबक हासिल करें।

कुरआने मजीद में है:

شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ
أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ (سورہ:الشوری، آیت:۱)

तर्जुमा: तुम्हारे लिए दीन की वो राह डाली जिस का हुक्म उसने नूह को दिया और जो हमने तुम्हारी तरफ वही की और जिस का हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया कि दीन क़ायम रखो उसमें फूट ना डालो।

क़ारेईन! नूह अलैह सलाम साहिबे शरअ़ में अंबिया में पहले नबी हैं।

अल्लाह तआला फरमाता है:

मेरे महबूब नूह अलैहिस्सलाम से लेकर तुम तक जितने अंबिया हुए सबके लिए मैंने दीन की एक राह मुकर्रर की है और सब मत्तफिक हैं, अल्लाह तआला ने अपनी मुराद बताते हुए दीन ए इस्लाम को सच्चा दीन बताया और फिर इस दीन की इताअत और अपने अंबिया और रुसुल की इताअ़त उम्मत पर लाज़िम करार दी और यह हुकुम सभी के लिए यकसा है।

लिहाज़ा उसूल ए दीन तमाम मुसलमानों के लिए यकसां हैं वो किसी भी अहद किसी भी उम्मत से हों उनमें कोई इख्तेलाफ नहीं है।

मैदाने बदर, मदीना तय्यबा से तकरीबन 150 और मक्का मुकर्रमा से 310 और बहरे अहमर से 45 किलोमीटर के फासले पर वाक़ेअ है। मौजूदा ज़माने में ये एक आबाद शहर है। "शाहराह ए हिजरत" बनने से क़ब्ल मक्का से मदीना और मदीना से मक्का जाने का रास्ता इसी इलाके से ही गुजरता था लेकिन इस वक्त मुसाफ़िरीन इस रास्ते से सफर नहीं करते। इस इलाके में शोहदा ए बदर के मकाबिर मुसलमानों की ज़ियारतगाह है।

क़ारेईन! इसी मैदाने बदर में इत्तेहाद इत्तेफ़ाक का लिवादा ज़ेबतन करके एक ऐसी कुव्वते दाएमी आई के सामने बेशुमार कुफ्फार और मुशरिकीन हैं और वो फकत 313 हैं

लेकिन इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक की बुनियाद पर फतह से हम किनार हुए और कामयाबी और कामरानी का ताज अपने सिरों पर रखा।

अल्लाह तआला फरमाता है;

"وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ
الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ"

(سورہ: توبہ، آیت: ۷۱)

तर्जुमा: और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफीक हैं भलाई का हुक्म दे और बुराई से मना करें और नमाज़ कायम रखें और अल्लाह और रसूल का हुक्म माने यह हैं जिन पर अनकरीब अल्लाह रहम करेगा बेशक अल्लाह गालिब हिकमत वाला है।

अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्द और औरतों को एक दूसरे का मददगार बनाया है लेकिन हम अपना जायज़ा लें कि हम कितने एक दूसरे के मददगार हैं? मर्द हज़रात कौम को ईज़ा देने में मसरूफ हैं तिफर्क़ा बाज़ी में मसरूफ हैं और औरतें चुगली,गीबत नेज़ इत्तेहाद और इत्तेफाक की बुनियाद को कमज़ोर करने में मशरूफ हैं, ना तो कोई किसी को भलाई का हुक्म दे रहा है ना ही नमाज़ के लिए लोगों को तैयार कर रहा है और ना ही अल्लाह और रसूल का हुक्म मान रहा है।

हालांकि कुरआन ने हुक्म दिया कि अल्लाह और रसूल की इताअत करें। जब हम इस से दूर हो गए तो ज़ाहिर है कि हमारे दरमियान इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक की बुनियाद नहीं पढ़ सकती क्योंकि कुरआन और अहादीस ही के ज़रिए हम इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक की दौलत से सरफराज़ हुए हैं।

नबी ए करीम ﷺ ने मुत्तहिद रहने का हुक्म दिया। दीन पर मुत्तहिद होने की वजह से लोगों के उमूर संवरते चले गए। लेकिन आज हम क़त्ल किए जा रहे हैं हमारी मसाजिद व खानक़ाहें और मकातिब जलाए जा रहे हैं उलामा ए किराम, हुफ्फाज़े इज़ाम को सरे आम क़त्ल किया जा रहा है इसकी असल वजह यही है के मुसलमानों को तिफर्का बाज़ी ने इस अज़ाब में मुब्तिला किया है और हमारी शनाख्त का आफताब ज़वाल पज़ीर हो रहा है। इत्तेहाद की ताकत को नापा नहीं जा सकता है जिसके लिए इत्तेहाद किया जाए तो बड़े से बड़े अज़्म को बआसानी फतह किया जा सकता है।

बिरादरी वाद से निजात ज़रूरी

: नाज़िश मदनी मुरादाबादी

दीने इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाब्ता ए हयात है। जिसमें हर लिहाज़ से हर मोड़ पर हमारी रहनुमाई की गई है। जहाँ न किसी अरबी को अजमी पर फज़ीलत है, न किसी गोरे को काले पर फज़ीलत, न ही कोई बिरादरी मियारे फज़ीलत कि पठान अंसारी से बुलंद हो, और शेख, मंसूरी से बदतर, बल्कि मियार फज़ीलत तक़वा और परहेज़गारी है। मगर इन्तेहाई अफसोस के साथ ये कहना पड़ रहा है कि मुआशरे में बिरादरी वाद की मुहलिक बीमारी नासूर की तरह बड़ी तेज़ी के साथ फैलती जा रही है। बड़े फ़करर के साथ बाज़ नादान लोग अपनी बिरादरी पर नाज़ करते, और दूसरे की बिरादरी पर तंज़ कसते नज़र आते हैं। जबकि बिरादरी वाद का इस्लाम में असलन कोई तसव्वुर नहीं। इस्लाम ने फज़ीलत और फौक़ियत का मियार तक़वा और परहेज़गारी पर रखा। चुनान्चे इरशाद ए रब्बानी है:

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ

तर्जुमा: बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुम में ज़्यादा परहेज़ग़ार है।

तफ़सीर सिरातुल जिनान में इस आयते करीमा के तहत लिखा है:

आयत के इस हिस्से में वो चीज बयान फरमाई जा रही है जो इंसान के लिए शराफत और फज़ीलत का सबब है और जिससे उसे अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त हासिल होती है। चुनान्चे इरशाद फरमाया: बेशक अल्लाह तआला की बारगाह में तुम से ज़्यादा

इज़्ज़त वाला वो शख़्स है जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है बेशक अल्लाह तआला तुम्हें जानने वाला और तुम्हारे बातिन से ख़बरदार है।

(तफ़सीर सिरातुल जिनान 9/446)

कुरआने मजीद, बुरहाने रशीद ने वाज़ेह तौर पर बतला दिया कि मियारे फज़ीलत, तक़वा और तहारत है। हसब नसब, शक़्ल और सूरत, रंग और रोगन का फज़ीलत के बाब से असलन कोई ताल्लुक नहीं। आइये इस ताल्लुक से चंद फरामीने मुस्तफा ﷺ मुलाहिज़ा करते हैं:

عن ابی ذر رضی اللہ تعالٰی عنہ"ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال لہ انظر فان لست بخیر من احمر ولا اسود الا ان تفضلہ بتقویٰ۔

رواہ احمد

तर्जुमा: अबू ज़र रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया कि नबी ﷺ ने उनसे फरमाया "बेशक तुम सियाह फाम से और सुर्ख से बेहतर नहीं और न सियाह फाम तुमसे बेहतर है। मगर ये कि उस पर फज़ीलत पाओ तक़वा की वजह से"

इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया।

(الترغیب والترہیب من احقار المسلم وانہ لا فضل لاحد الخ حدیث ۸ مصطفی البابی مصر ۳/ ٦١٢)

इस हदीसे पाक में आक़ा ए करीम ﷺ ने वाज़ेह फरमा दिया कि किसी सियाह फाम को किसी सुर्ख पर फज़ीलत नहीं अगर फज़ीलत है तो वो तक़वा शिआरी और परहेज़गारी है।

दूसरी रिवायत में है :

عن جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال خطبنا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی اوسط ایام التشریق خطبۃ الوداع فقال یا ایھاالناس ان ربکم واحدو ان اباکم واحد۔الا لا فضل لعربی علیٰ عجمی ولا لعجمی علی عربی ولا لاحمر علیٰ اسودولا لا سود علیٰ احمر الا بالتقویٰ ان اکرمکم عند اللہ اتقٰکم

तर्जुमा: हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदिअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने फरमाया कि हमें रसूल अल्लाह ﷺ ने अय्यामे तशरीक़ के दरमियानी दिन में खुत्बा ए अलविदा दिया, फरमाया ऐ लोगों! बेशक तुम्हारा रब एक है और बेशक तुम्हारा बाप एक है। सुनते हो अरबी को अजमी पर फज़ीलत नहीं और न अजमी को अरबी पर और न सुर्ख को काले पर और न काले को सुर्ख पर फज़ीलत है मगर तक़वा से, बेशक अल्लाह के नज़दीक तुममे सबसे ज्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है।

(الترغیب والترہیب من احقار المسلم وانہ لا فضل لاحدالخ حدیث ۹ مصطفی البابی مصر ۳/ ۶۱۲ تا ۶۱۳)

इस हदीसे मुबारका से ये साफ़ मालूम हो गया कि बारगाहे ईज़दी में इज़्ज़त और फज़ीलत का मदार हसब और नसब पर नहीं बल्कि परहेज़ग़ारी पर है।

एक हदीस पाक और मुलाहिज़ा करते हैं:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदिअल्लाह तआला अन्हुमा फरमाते हैं,फतेह मक्का के दिन हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने खुत्बा देते हुए इरशाद फरमाय: ऐ लोगों! अल्लाह तआला ने तुम से जाहिलियत का गुरूर और एक दूसरे पर खानदानी फख्र दूर कर दिया है और अब सिर्फ दो क़िस्म के लोग हैं,

(1) नेक और मुत्तक़ी शख्स जो कि अल्लाह तआला की बारगाह में मुअज़्ज़ज़ है ।

(2) गुनाहगार और बद बख्त आदमी, अल्लाह तआला की बारगाह में ज़लील और ख्वार है।

तमाम लोग हज़रत आदम अलैह सलाम की औलाद हैं और हज़रत आदम अलैह सलाम को अल्लाह तआला ने मिट्टी से पैदा किया है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है:

''يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْاؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ''

तर्जुमा कंज़ुल ईमान: ऐ लोगों! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें क़ौमें और क़बीले बनाया ताकि तुम आपस में पहचान रखो, बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है।

(तिर्मिज़ी, किताब अत-तफ़सीर, सूरह अल हुजरात, 5/149, अहदीस-1823)

इस हदीसे मुबारका में जहां नबी पाक ﷺ ने बारगाहे इलाही में इज़्ज़त और तकरीम का मियार तक़वा शिआरी को क़रार दिया, वहीं ये भी वाज़ेह कर दिया कि नसब पर फखर और गुरूर करने वाला शख्स बदबख्त है और बारगाहे खुदा बंदी में ज़लीलो ख्वार है।

नेज़ हसब और नसब पर फखर और गुरूर खुद एक हराम फेल है। कुरआन और हदीस में मुताअद्दिद मक़ामात पर इसकी मज़म्मत वारिद है। चुनांचे इरशादे बारी तआला है:

يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى

तर्जुमा: ऐ लोगों! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।

(सुरह हुजरात आयत नंबर: 18)

तफ़सीर सिरातुल जिनान में इस आयते मुबारका के तहत लिखा है:

इरशाद फरमाया: ऐ लोगों! हमने तुम्हें एक मर्द हज़रत आदम अलैह सलाम और एक औरत हव्वा रदिअल्लाहु अन्हा से पैदा किया और जब नसब के इस इन्तेहाई दर्जे पर जा कर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में एक दूसरे पर फख्र और बड़ाई का इज़हार कर ने की कोई वजह नहीं, सब बराबर हो और एक जद्दे आला की औलाद हो (इसलिए नसब की वजह से एक दूसरे पर फख्र का इज़हार न करो) और हम ने तुम्हें मुख्तलिफ कौमें,क़बीले और खानदान बनाया ताकि तुम आपस में एक दूसरे की पहचान रखो और एक शख्स दूसरे का नसब जाने और इस तरह कोई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की तरफ अपने आप को मंसूब न करे, न कि अपने नसब पर फख्र करने लग जाये और दूसरों की तहक़ीर करना शुरू कर दे।

(तफ़सीर सिरातुल जिनान 9,444)

हसब नसब पर तकब्बुर और घमंड की मज़म्मत में नबी पाक ﷺ के चंद फरामीन मुलाहिज़ा करते हैं :

नबी ए अकरम ﷺ की मौजूदगी में दो आदमियों ने एक दूसरे पर फख्र का इज़हार किया, एक ने कहा " मैं फलां का बेटा फलां हूं तुम कौन हो ? तुम्हारी तो मां ही नहीं ", इस पर हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया; " हज़रत मूसा अलैह सलाम के सामने दो आदमियों ने एक दूसरे पर फख्र किया, उनमें से एक ने कहाः मैं फलां का बेटा फलां हूं, इस तरह वो नौ पुश्तें शुमार कर गया और कहा: तेरी तो मां ही नहीं है। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैह सलाम की तरफ वही भेजी कि जिसने फख्र का इज़हार किया है उस से फरमा दीजिए; वो नौ की नौ पुश्तें जहन्नम में जाएंगी और तुम उनके साथ दसवें होगे।

(मुसनदे इमाम अहमद, मुसनदुल अंसार, हदीस अब्दुर रहमान बिन अबी लैला 8/43, अहादीस: 3221)

एक रिवायत में इस तरह है :

नबी ﷺ ने इरशाद फरमाया लोगों को अपने आबाओ अजदाद पर फख्र करना छोड़ देना चाहिए वो जहन्नम में कोयले बन गए या वो अल्लाह तआला के नज़दीक उन कीड़ों से भी ज़्यादा ज़लील हैं जो अपनी नाक से गंदगी को धकेलते हैं।

(अबू दाऊद, किताब उल अदब, बाब फि तफ़ाख़ुर बिल इहसाब, 4/724, अहदीस: 6115, बाख्तिलाफ बाज़ अल्फाज)

इन दोनों अहादीसे मुबारका में नबी ﷺ ने नसब पर फख्र और घमंड करने वालों के लिए सख्त वईदें इरशाद फरमा दीं की जिस सबब से वो अपने आबाओ अजदाद पर फख्र कर रहे हैं, खुद उनकी ये हालत है कि वो जहन्नुम में जल कर कोयला बन चुके हैं। इस तरह नसब पर फख्र करने वालों को उस गंदे कीड़े से भी बदतर बताया गया जो अपनी नाक से गलाज़त को धकेलता है। अल्लाहु अकबर! नसब और बिरादरी पर गुरूर करने वालों को इन अहदीसे मुबारका से इबरत हासिल करना चाहिए।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन मोहम्मद ग़ज़ाली अलैह रहमा फरमाते हैं: जिस आदमी का नसब अच्छा हो वो दूसरे नसब वालों को हकीर जनता है और बाज़ लोग हसब नसब के ज़रिए इस तरह तकब्बुर करते हैं कि गोया दूसरे लोग उनकी मिल्कियत में और उनके गुलाम हैं, उनसे मेल जोल करने और उनके पास बैठने से नफ़रत करते हैं। और इसका नतीजा उनकी ज़ुबान पर यूँ आता है कि तकब्बुर करते हुए दूसरों को घटिया किस्म के अल्फ़ाज़ से पुकारते हुए कहते हैं; तुम कौन हो? तुम्हारा बाप कौन है? मैं फलां का बेटा हूं, तुम्हें मुझ से बात करने या मेरी तरफ देखने का क्या हक है? तो तू मुझ जैसे लोगों से बात करता है और मुझसे इस किस्म की गुफ़्तगू करता है? (वगैरह)

ये एक ऐसी पोशीदा रग है कि कोई भी नसब वाला उससे खाली नहीं होता अगरचे वो नेक और बाअमल हो, लेकिन बाज़ औक़ात हालते ऐतिदाल पर होने की सूरत में ये बात

ज़ाहिर नहीं होती और जब उस पर गुस्से का गलबा हो तो उसके नूरे बसीरत को भुजा देता है और इस किस्म की गुफ़्तगू उसकी ज़ुबान पर आ जाती है।

(इहया उल उलूम अद-दीन, किताब ज़म्मुल किब्र, , 3/34-234)

अगर इस ताल्लुक़ से हम अकाबिर के इस किरदार पर एक नज़र डालते हैं तो यह बात आफताबे नीम रोज़ की तरह ज़ाहिर और बाहिर हो जाती है कि वो नुफूसे क़ुद्सिया अपने हसब और नसब पर क़तअन नाज़ां नहीं थीं बल्कि ऐसे कलिमात को नाम के साथ लिखने से भी एहतिराज़ करते थे जिनसे उनकी बढ़ाई ज़ाहिर हो। सय्यदुना सरकार आला हज़रत अलैह रहमतो व रिज़वान खुद बिरादरी की लिहाज़ से पठान थे मगर तारीख गवाह है हज़रत ने अपने नाम के साथ खान कभी नहीं लिखा बल्कि हमेशा अपने दस्तखत ऐसे करते अब्दुल मुज़न्नब अहमद रज़ा अफी अनह इसी तरह आपके शहज़ादे सरकार मुफ्ती ए आज़म हिंद अलैह रहमा का भी यही तरीका ए कार था कि कभी नाम के आगे खान नहीं लिखा बल्कि लिखते फ़कीर मुस्तफा रज़ा غفر له और नाम के साथ ऐसे कलिमात लिखने की ज़रूरत भी क्या है जिनसे अपनी बढ़ाई होती हो की मैं खान हूं, मैं पठान हूं, मैं शेख हूं, मैं सय्यद हूं, वगैरह। हीरे के बारे में बताया नहीं जाता कि ये हीरा हैं बल्कि उसकी चमक खुद उसकी शनाख्त करा देती है। क्या ज़रूरत है अपनी बिरादरी और नसब के बारे में बिला ज़रूरत ढिंढोरा पीटने की। आपका अख़लाक़ और किरदार ऐसा हो कि वो खुद आपकी तारीफ कर रहा हो।

बिल जुमला नसब और बिरादरी पर फख्र करने में नुक़सान ही नुक़सान है। दुनिया का नुक़सान तो ज़ाहिर है और उखरवी वईदें ऊपर आप मुलाहिज़ा कर चुके हैं। लिहाज़ा अक्लमंद शख्स दुनियावी इक़तिदार और हसब और नसब पर नाजां होकर अपनी आक़िबत ख़राब नहीं करता बल्कि असल सरमाया ए आखिरी तक़वा और तहारत को अपनी जिंदगी में नाफिज़ करता है और फिक्रे उक़बा में लगा रहता है। लिहाज़ा हर

मुसलमान को चाहिए कि वो नसब पर फख्र करने से गुरेज़ करे, और तक़वा और परहेज़गारी इख्तियार करे ताकि अल्लाह तआला की बारगाह में उसे इज़्ज़त और फज़ीलत हासिल हो।

दुआ है बारी तआला हम तमाम को तक़वा शिआरी की नेमत से मालामाल फरमाए।

आमीन!

गैर मुक़ल्लिदीन के गुमराहकुन नज़रियात से इज्तेनाब की तदाबीर

:मोहम्मद आदिल रज़ा मातुरीदी

दुनिया के हर शोबे में किसी भी चीज़ को सीखने सिखाने के लिए उस्ताद की ज़रूरत पड़ती है। बग़ैर उस्ताद के सीखे हुए ज़्यादा ग़लतियां होने और राहे रास्त से भटक जाने का पूरा अन्देशा रहता है। चाहे वो दीनी उलूमो फ़ुनून हों या दुनियावी काम काज हों। बग़ैर मुअल्लिम के सीखे हुए मुकम्मल हासिल नहीं हो सकते हैं। आज के पुर फ़ितन दौर में लोग सोशल मीडिया पर कुछ ग़ैर आलिम, बदमज़हब व ग़ैर मुक़ल्लेदीन दयाबना व वहाबिया के बयानात सुनते हैं जो क़ुरआन व हदीस का सहारा लेकर ग़लत तरजीह व तशरीह और ग़लत मसाइल बयान करते हैं। जिसकी वजह से भोली भाली आवाम और आज़ाद ख़्याल लोग कुरआन और हदीस का नाम सुनकर राहे रास्त से भटक जाते और गलत मसाइल पर अमल करते हैं। तो ईमान और इस्लाम और आमाल सब बर्बाद हो जाते हैं तो मुसलमानों को चाहिए कि अपने मसाइले ईमान और इस्लाम, ज़रूरियाते दीन वगैरह सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मोअतबर और मुस्तनद अहले सुन्नत व जमाअत उलामा ए किराम से पूछें और उन पर अमल करें। और सवादे आज़म की पैरवी करें। अल्लाह तआला ने अहले इल्म से पूछने का हुक्म दिया।

कुरआने मजीद में है:

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ:(سورہ انبیاء، آیت:۷)

तर्जुमा: तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म ना हो।

तफ़सीर सिरातुल जिनान मैं इस आयत के ज़िमन में लिखा है:

शरई मालूमात ना होने और ना लेने के नुकसानात:

इस आयत में ना जानने वाले को जानने वाले से पूछने का हुक्म दिया गया क्योंकि नावाकिफ के लिए इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं कि वह वाकिफ से दरयाफ्त करे और जिहालत के मर्ज़ का इलाज भी यही है कि आलिम से सवाल करें और उसके हुक्म पर अमल करें और जो अपने इस मर्ज़ का इलाज नहीं करता वह दुनिया और आखिरत में बहुत नुकसान उठाता है यहां इसके चंद नुकसानात मुलाहिज़ा हों

(1) ईमान एक ऐसी अहम तरीन चीज़ है जिस पर बंदे की उखरवी निजात का दारोमदार है और ईमान सही होने के लिए अकाइद का दुरुस्त होना ज़रूरी है। लिहाज़ा सही इस्लामी अकाइद से मुताल्लिक मालूमात होना जरूरी है। अब जिसे इन अकाइद की मालूमात नहीं जिन पर बंदे का ईमान दुरुस्त होने का मदार है, तो वह अपने गुमान में यह समझ रहा होगा कि मेरा ईमान सही है लेकिन हक़ीक़त उसके बरअक्स भी हो सकती है और अगर हक़ीक़त बरअक्स हुई और हालते कुफ्र में मर गया तो आखिरत में हमेशा के लिए जहन्नम में रहना पड़ेगा और उसको इंतिहाई दर्दनाक अज़ाब सहने होंगे।

(2) फ़र्ज़ और वाजिब और दीगर इबादात को शरई तरीके के मुताबिक अदा करना ज़रूरी है इसलिए उनके शरई तरीके की मालूमात होना भी ज़रूरी है। अब जैसे इबादत के शरई तरीके और उससे मुताल्लिक दीगर ज़रूरी चीज़ों की मालूमात नहीं हो तो वो किसी आलिम से मालूमात हासिल करता है तो मशक्कत उठाने के सिवा उसे कुछ हासिल नहीं होता। जैसे नमाज़ के दुरुस्त और काबिले कुबूल होने के लिए तहारत एक बुनियादी शर्त है और जिसकी तहारत दुरुस्त ना हो तो वह अगरचे वर्षों तक तहज्जुद की नमाज पढ़ता रहे, पाबंदी के साथ पांचो नमाज़े बा जमाअत अदा करता रहे और सारी सारी रात नवाफिल पढ़ने में मसरूफ रहे उसकी यह तमाम इबादात रायगा जाएंगी और वह उनके सवाब से महरूम रहेगा।

(3) कारोबारी, मुआशरती और अज़्दवाजी ज़िंदगी के बहुत से मामले ऐसे हैं जिनके लिए शरियत ने कुछ उसूल और क़वानीन मुकर्रर किए हैं और इन्ही उसूल पर उन मामलात के हलाल या हराम होने का मदार है और जिसे इन उसूल और क़वानीन की मालूमात ना हो और ना ही वह किसी से उनके बारे में मालूमात हासिल करें तो हलाल की बजाय हराम में मुब्तिला होने का चांस ज़्यादा है और हराम में मुब्तिला होना खुद को अल्लाह तआला के अज़ाब का हकदार ठहराना है।

सरे दस्त यह तीन बुनियादी और बड़े नुकसानत अर्ज़ किए गए हैं वरना शरई मालूमात ना लेने के नुकसानात की एक तवील फहरिस्त है जिसे यहां ज़िक्र करना मुमकिन नहीं। दुआ है के अल्लाह तआला हर मुसलमान को अक़ाइद, इबादात, मामलात और ज़िंदगी के हर शोबे में शरई मालूमात हासिल करने और उसके मुताबिक अमल करने की तौफीक अता फरमाए, आमीन!

सुनन अबू दाऊद की हदीस है:

रसूले अकरम ﷺ फरमाते हैं:

الا سئلوا ان لم يعلموا فانما شفا العى السؤال"۔"

(سنن ابو داؤد، صفحہ: ٤٨، بيت الافكار الدوله)

तर्जुमा: अगर वह नहीं जानते तो पूछते क्यों नहीं क्योंकि मर्ज़े जिहालत की शिफा सवाल करना है।

आजकल गैर मुक़ल्लेदीन खासतौर से तक़लीद को लेकर शोरो गुल किए हुए हैं। कभी उसको शिर्क बताते हैं, तो कभी कुफ्र कहते हैं, तो कभी हराम कहते हैं। और वह तक़लीद

से हटकर अपनी अक्ल की तक़लीद करते, कराते हैं। जब के कुरआन और हदीस में तक़लीद करने और सवादे आज़म की पैरवी करने का हुक्म दिया गया है।

आईए तक़लीद की तारीफ और उसके अहकाम के बारे में जानते हैं।

तक़लीद के लुगवी मायने " अलक़ामूस अल मुहीत़ में है":

"القلادة ما جعل فی عنقه"

(القاموس المحيط جلد ا صفحه ٤٥٨ دار الكتب العلمية بيروت)

یعنی قلادہ در گردن بستن

यानी गले में हार या पट्टा डालना।

गयासुल लुगात में है:

"تقلید مجازاً بمعنی پیروی کسے بے دریافت حقیقت آں"

(غیاث اللغات صفحه ۱۲۵ مطبوعه رزاقی پریس نپوکار)

तर्जुमा: किसी की पैरवी करना उसकी हक़ीक़त दरियाफ्त किए बगैर उसको मजाज़न तक़लीद कहते हैं।

अल्लामा अली बिन मुहम्मद सय्यद शरीफ जुरजानी 814 हिजरी तक़लीद की तारीफ लिखते हैं:

"التقليد عبارة عن اتباع الإنسان غيره فيما يقول او يفعل معتقدا للحقية من غير نظر و تأمل في الدليل كأن هذا المتبع جعل قول الغير او فعله قلادة في عنقه"

(معجم التعريفات صفحه ٥٨ رقم اللفظ ٥٢٢ دار الفضيلة قاہرہ)

तर्जुमा: तक़लीद ये है कि इंसान दूसरे के क़ौल या फेल को अपने गले का क़लादा या हार बना ले।

इमाम काज़ी मुहिब्बुल्लाह बिन अब्दुश शकूर अल बिहारी (मुतावफ्फा 1110 हि), फवातिहुर रहमूत में तक़लीद की तारीफ लिखते हैं:

"التقلید العمل بقول الغیر من غیر حجة والمراد ب۔ الحجة حجة من الحجج الاربع والا فقول المجتهد دلیله و حجیة کأخذ العامی من المجتهد"

(فواتح الرحموت جلد۲ صفحه ۴۳۲ دارالکتب العلمیة بیروت)

तर्जुमा: तक़लीद नाम है दूसरे के कौल पर बिला दलील अमल, दलील से मुराद किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलल्लाह, इजमा ए उम्मत है वरना मुजतहिद का कौल इसकी दलील है (जिसके के रुजूअ का किताबो सुन्नत में हुक्म है)

अहकाम की दो क़िस्में हैं:

अहकामे अक़्ली और अहकामे शरई।

अहकामे अक़्लिया वो है जिसमें किसी की तक़लीद जायज़ नहीं है जैसे सानेए आलम और उस (अल्लाह तआला) की सिफात की मारिफत, इसी तरह रसूल अल्लाह ﷺ और हुज़ूर ए अकरम ﷺ के सच्चे होने की मारिफत वगैरह।

इमाम अबू बक्र बिन अहमद बिन अली बिन साबित अलख़तीबुल बग़दाद (मुतावफ्फा 264 हि) लिखते हैं:

"والاحکام علی ضربین عقلی و شرعی"

فاما العقلی فلا یجوز فیه التقلید کمعرفة الصانع تعالی و صفاته و معرفة الرسول ﷺ و صدقه وغیر ذلك من الاحکام العقلیة"

(الفقیه والمتفقه جلد۲ صفحه ۱۲۸ دار ابن الجوزی ریاض)

तर्जुमा: अक़्ली अहकाम में तक़लीद जाइज़ नहीं जैसे सानए आलम (ख़ालिके कायनात) और उसकी सिफात इसी तरह रसूल ﷺ और हुज़ूर ﷺ के सच्चे होने की मारिफत वगैरह।

रहा अहकामे शरईया उसकी दो क़िस्में तहरीर फरमाते हैं:

"واما الاحکام الشرعیة فضربان

احدهما یعلم ضرورة من دین الرسول ﷺ کالصلوات الخمس والزکوات و صوم شهر رمضان والحج و تحریم الزنا و شرب الخمر وما اشبه ذلك فهذا لا یجوز التقلید فیه لأن الناس کلهم یشترکون فی ادراکه والعلم به فلا معنی للتقلید فیه"

وضرب آخر لا یعلم الا بالنظر والاستدلال کفروع العبادات والمعاملات والفروج والمناحکات و غیر ذلك من الاحکام فهذا یسوغ فیه التقلید

(ایضًا، صفحه ۱۳۲)

अहकामे शरईया की दो किस्में हैं पहली किस्म ज़रूरियाते दीन जैसे 5 नमाज़े, रोज़ा, हज, ज़कात इसी तरह ज़िना और शराब की हुरमत बगैरह के अहकाम। लिहाज़ा इन अहकाम में तक़लीद जाइज़ नहीं क्योंकि इनके जानने में सारे लोग बराबर हैं इसलिए उन अहकाम में तक़लीद की कोई ज़रूरत नहीं।

दूसरी किस्म दीन के वो अहकाम जिन्हें नज़र और इस्तिदलाल के बगैर नहीं जाना जा सकता जैसे इबादात और मामलात और निकाह वगैरह के फुरूई मसाइल में इजतिहाद की ज़रूरत होती है लिहाज़ा मसाइल में तक़लीद की जाती है।

हमारी बहस यहां अहकामे शरईया के दूसरी किस्म यानी दीन के वो अहकाम जिन्हें नज़र और इस्तिदलाल के बगैर नहीं जाना जा सकता है जैसे इबादात, मामलात और निकाह वगैरह के फुरूई मसाइल जिनमें इजतिहाद की ज़रूरत होती है वह अहकाम जो अइम्मा ए मुजत्हेदीन ने कुरआन और सुन्नत के नुसूस से इजतिहाद और इस्तिंबात करके निकाले हैं लिहाज़ा उन मसाइल में तक़लीद की जाती है जिसका हुक्म कुरआन और हदीस और आसारे खल्फ और सल्फ से साबित है।

कुरआने मजीद में है:

"فَلَوْ لَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآىِٕفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ"ع

(پارہ ١١ سورہ توبہ آیت ١٢٢)

तर्जुमा: तो क्यों ना हो के उनके हर गिरोह में से एक जमाअत निकले के दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी कौम को डर सुनाएं इस उम्मीद पर कि वो बचें।

कुरआने मजीद में है:

"يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ"ج

(پارہ ٥ سورہ نساء آیت ٥٩)

तर्जुमा: ऐ ईमान वालों हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उनका जो तुम में से हुकूमत वाले हैं।

इस आयते करीमा में ऊलुल अमर से मुराद फुक़्हाए मुजत्हेदीन हैं। जैसा कि सैयद उल मुफस्सिरीन हज़रत इब्ने अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है।

तफ़सीर इब्ने कसीर में है:

"قال علی بن ابی طالب عن ابن عباس واولی الامر منکم یعنی اهل الفقه والدین وکذا قال مجاهد وعطاء والحسن بصری وابو العالیة واولی الامر منکم یعنی العلماء والظاهر والله اعلم انها عامة فی کل اولی الامر من الامراء والعلماء کما تقدم"

(تفسیر ابن کثیر جلد ۲ صفحه ۲۸۵ دار الکتاب العربی بیروت)

तर्जुमा: अली बिन अबू तालिब रदी अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रदि अल्लाह तआला अन्हु से मरवी है के ऊलुल अमर से मुराद फुक़्हा और आइम्मा ए दीन हैं। मुजाहिद अता, हसन बसरी और अबुल आलिया से मनकूल है कि ऊलुल अमर से मुराद उलामा हैं और ज़ाहिर यह है कि कलमा तमाम असहाबे अम्र, हुक्काम और उलामा को आम है जैसा के बयान हो चुका।

कुरआने मजीद में है:

"يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ"

(پارہ ۱۵ سورہ اسرائیل آیت ۷۱)

तर्जुमा: उस दिन हम हर जमाअ़त को उसके इमाम के साथ बुलाएंगे।

इस आयते करीमा की तफ़सीर में अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी हनफी (मुतावफ्फा 1127 हि) लिखते हैं:

"او مقلد فی الدین فیقال یا حنفی یا شافعی"

(تفسیر روح البیان جلد ۵ ۱۸۷ دار الکتب العلمیة بیروت)

तर्जुमा: इमाम दीनी पेशवा है पस कयामत में कहा जाएगा कि ऐ हनफी ऐ शाफई।

हदीसे रसूल ﷺ से तक़लीद का सुबूत:

इमाम अबू अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहमान अत-तमीमी अल-समरक़न्दी, अद-दारमी (मुतावफ्फा 255 हि) सुनन दारमी में तहरीर फरमाते हैं:

"اخبرنا يعلي حدثنا عبد الملك عطاء اطيعوا الله واطيعوا الرسول واولي الامر منكم قال اولو العلم والفقه"

(سنن دارمی جلد ا صفحہ ۵۱ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

तर्जुमा: खबर दी हमको हज़रत अली ने उन्होंने कहा: मुझसे हदीस बयान की अब्दुल मलिक ने उन्होंने अता से रिवायत की कि इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और अपने में से अम्र वालों की। फरमाया अता ने कि ऊलुल अम्र, इल्म और फिक़्ह वाले हज़रात हैं।

हदीस में है:

"عن تمیم الداری ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیه وسلّم قال الدین النصیحه قلنا لمن قال لله والکتابه ورسوله ولائمة المسلمین وعامتهم"

(صحیح مسلم صفحه ۵۴ بیت الافکار الدوله)

तर्जुमा: दारमी से मरवी है कि हुज़ूर अकरम ﷺ ने फरमाया के दीन खैर ख्वाही है हमने अर्ज़ किया किसकी? फरमाया अल्लाह की और उसकी किताब की और उसके रसूल की और मुसलमानों के इमामों की और आइम्मा ए मोमिनीन की।

इमाम हाफ़िज़ मुहीयुद्दीन अबू ज़करिया बिन शर्फ नव्वी (मुतावफ्फा 474 हि) इस हदीस पाक की शरह में तहरीर फरमाते हैं:

" وقد يتناول ذلك علي الائمة الذين هم علماء الدين وان من نصيحتهم قبول ما رووه وتقليدهم
في الاحكام واحسان الظن بهم"

(شرح النووی علی مسلم صفحه ۱۳۱ بیت الافکار الدوله)

तर्जुमा: हदीस उन इमामों को भी शामिल है जो उलामा ए दीन हैं। और उलामा की खैर ख्वाही से है उनकी रिवायत की हुई अहादीस का कुबूल करना और उनके अहकाम में तक़लीद करना और उनके साथ नेक गुमान करना।

मिश्कात उल मसाबीह में हैं :

"ان الشيطان ذئب الا نسان كذئب الغنم يا خذ الشاذة والقاصية والناحية واياكم والشعاب
وعليكم بالجماعة والعماة"

(مشکوة المصابیح کتاب الایمان صفحه ۱۸۵ الکتاب الاسلامی)

तर्जुमा: शैतान आदमी का भेड़िया है जैसे बकरियों का भेड़िया अलग और दूर और किनारे वाली को पकड़ता है (यानी जो जमाअते मुस्लेमीन से अलग रहा शैतान के शिकार में) तुम घाटियों से बचो। जमाअते मुस्लेमीन और अवाम को लाज़िम पकड़ो (यानी वो अक़ायद इख़्तियार करो जो आम्मतुल मुस्लेमीन के हों)

ख़ल्फ़ व सल्फ़ से तक़लीद का सुबूत:

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिसे देहलवी अलैह रहमा इक़्द उद जीद में तहरीर फ़रमाते हैं।

''باب تاكيد الاخذ بمذاهب الاربعة والتشديد فى تركها والخروج عنها :۔ اغلم ان فى الاخذ بهذه المذاهب الاربعة مصلحةً عظيمةً وفى الاعراض عنها كلها مفسدة كبيرة۔

तर्जुमा: बाबे सोम, उन चार मज़हबों के इख़्तियार करने की ताकीद और उनको छोड़ने और उनसे बाहर निकलने की मुमानेअत ए शदीद के बयान में। जानना चाहिए के इन चारों मज़हबों को इख़्तियार करने में एक बड़ी मसलेहत है और उन सब से एअ़राज़ व रू-गिरदानी में बड़ा मुफ़सिदा है।

(عقد الجيد مع سلک مرداريد ص ٣١)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं:

"وانما حق العوام ان يومنوا ويسلموا و يشتغلوا بعبادتهم ومعا يشتهم ويتر كوا العلم للعلماء فالعامى لو يزنى و يسرق كان خيراًله من ان يتكلم فى العلم فانه من تكلم فى الله وفى دينه من غير اتقان العلم وقع فى الكفر من حيث لا يدرى كمن يركب لجة البحر وهو لا يعرف السباحة"

तर्जुमा: अवाम का फ़र्ज़ है के ईमान और इस्लाम लाकर अपनी इबादतों और रोज़गार में मशगूल रहें इल्म की बातों में मुदाख़लत न करें उसको उल्मा के हवाले कर दें। आमी शख़्स का इल्मी सिलसिले में हुज्जत करना ज़िना और चोरी से भी ज़्यादा नुक़सान देह और ख़तरनाक है क्योंकि जो शख़्स उलूम में बसीरत और पुख़्तगी नहीं रखता वो अगर अल्लाह तआला और उसके दीन के मसाइल में बहस करता है तो बहुत मुमकिन है के वो ऐसी राय क़ायम करे जो कुफ़्र हो और उसको इसका एहसास भी न हो के जो उसने

समझा है वो कुफ़्र है। उसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो तैरना न जानता हो। समुंद्र में कूद पड़े।

(احیاء العلوم ص ۳۵ ج ۳)

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के अफ़कारो नज़रियात से बचने के लिए आवाम व ख़्वास के लिए ज़रूरी है के जिन मसाइल में शक्को शुबह हो वो सुन्नी सहीहुल अक़ीदा उलामा ए किराम से पूछें और सुन्नी सहीहुल अक़ीदा उलामा ए किराम की कुतुब का मुतालेआ करें। सुन्नी सहीहुल अकीदा उलामा ए अहले सुन्नत व जमाअत के बयानात ही सुनें।

इस्लाम में सफाई की अहमियत, एहकामात, मन्सूबे और इक़दामात

:मुहम्मद मुफ़ीज़ुद्दीन मिस्बाही

इस्लाम का दूसरा नाम दीने तहारत है, जो इंसान को महद से लेकर लहद तक साफ सुथरा रहने की तालीम देता है। इंसान ख्वाह किसी भी सूबे से मुंसलिक हो उसकी शरशत,फितरत में तहारत, लताफत और पाकिज़गी रखी गई है कि वो लाशऊरी तौर पर सफाई ,सुथराई और नज़ाफत को पसंद करता है और गंदगी, ख़बासत, निजासत और गलाज़त को न पसंद करता है। शायद यही वजह है कि कुतुबे फिक़्ह में अब्वाब की तरतीब में फुक़्हा ने " किताब उत तहारात" को मुकद्दम किया यानी इस्लाम में तहारत इबादत और मुआमलात पर भी मुकद्दम है, नेज़ इसके उसूल और फुरूअ़, अक़ाइद और इबादात, मामलात और अख़्लाक़ियात का बङा हिस्सा तहारत और नज़ाफत पर मुशतमिल है। इसलिए रसूल अल्लाह ﷺ ने तहारत को निस्फ ईमान क़रार दिया है। चुनान्चे इरशाद फरमाया:

"الطهارة نصف الایمان"

पकीज़गी निस्फे ईमान है।

المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الايمان و الرؤيا، ج: ١٥، ص: ٢٢٧، شركة دار القبلة)

एक और रिवायत में "شطر الايمان" का लफ़्ज़ आया है और इसी तरह मुताअद्दिद मवाक़ेअ पर पैगंबरे इस्लाम ﷺ ने तहारत और नज़ाफत को दिलकश अंदाज, खूबसूरत उसलूब और शगुफ़्ता पैराये में बयान फरमाया।

अवाम में सफाई और पाकीज़गी के हवाले से शऊर उजागर करने के लिए 15 अक्टूबर 2008 आलमी सतह पर एक कान्फ्रेंस मुनअक़िद हुई जिसमें 70 मुमालिक के सरवराहान ने शिरकत की और उसको ग्लोबल हैंड वाशिंग डे का नाम दिया गया और इसी रोज़ 1 करोड़ 20 लाख बच्चों ने साबुन से हाथ धुले। अक़्वामे मुत्तहेदा की जनरल असेंबली ने इस साल को सेहत और सफाई का साल क़रार दिया था। ये बहुत खुश आईन्द कदम है कि हाथों की सफाई में बे तवज्जोही की वजह से मुँह और आँख में इन्फेक्शन का बहुत इमकान होता है लेकिन मज़हबे इस्लाम में हाथ धोने की पुरानी रिवायत है, हुज़ूर ﷺ ने फरमाया:

खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धुलो।

(الشمائل المحمدية للترمذی ، باب ماجاء في صفة ادام رسول اللـه صلی الله علیه وسلم ، ص : ۳۰۸)

इसी तरह जब कोई शख्स नींद से बेदार हो तो अपना हाथ बर्तन में ना डालें जब तक उसे 3 बार ना धो ले क्योंकि तुम में से कोई भी नहीं जानता कि इसके हाथ ने रात कहां गुज़ारी।

(السنن الکبری للبھیقي ، کتاب الطھارة / باب التکرار في غسل الیدین ، ص : ٤٦)

इसलिए के हाथ आला ए तहारत है, और जब वही साफ और ताहिर ना हो तो उससे तहारत क्या हासिल होगी।

ईमान वो गैर फानी नेमत व ला-ज़वाल दौलत है, दुनिया में जिसका हमसर और शरीक कोई नहीं एक साहिबे ईमान की जिबिल्लत और फितरत यही है ताहम मज़हबे इस्लाम में नज़ाफत की अहमियत किस कदर है कि इसको ईमान का आधा हिस्सा करार दिया गया। इस्लामी एहकाम में से है कि हफ्ता में एक मर्तबा मूए ज़ेरे नाफ़ और मूए ज़ेरे बगल साफ करें,अगर ना कर सकें तो हर 15 दिन बाद करें, और 40 दिन बाद कोई उज़्र मसमूअ न होगा। ब्लकि वो वईद का मुस्तहिक़ होगा, इसी तरह मूछें और नाखून जैसे फितरी उमूर

के लिए ज़्यादा से ज़्यादा 40 दिन मुकर्रर फरमाए हैं। हजरत अनस बिन मालिक रदिअल्लाह अन्हू बयान फरमाते हैं;

وقت لنا فی قص الشارب، وتقلیم الاظفار، ونتف الابط، وحلق الاعانة، ان لا نترک اکثر من اربعین لیلة۔

हमारे लिए मूछें तरशवाने, नाखून काटने, बगलों के और ज़ेरे नाफ बाल साफ करने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत 40 दिन मुकर्रर की गई है।

(صحیح المسلم ، کتاب الطھارۃ ، باب خصال الفطرۃ ج : ۱ ، ص : ۱۲۸ مجلس البرکات)

इस्लाम में गायत दर्जा एहतमाम पाकीज़गी का हुक्म है, यहां तक कि ठहरे हुए पानी में पेशाब करना जायज़ नहीं इसलिए कि इस पानी को बहुत से कामों में इस्तेमाल किया जाना मुमकिन है अगर कोई जुनबी हो जाए तो उसको हुक्म है कि जल्द से जल्द गुस्ल से फारिग हो और गुस्ल भी नजासत से आलूदा कपड़े में नहीं करना चाहिए, बल्कि पहले उस कपड़े की नजासत को अच्छी तरह से दूर करें और जिस्म पर नजासत लगी हो तो उसको भी दूर करें फिर गुसल करें। फुक़्हा ने फरमाया अगर माए मगसूला नहाने की जगह जमा हो रहा है तो गुस्ल से अलहैदा होकर पांव धोएं।

आज साइंसी तहकीक कहती है कि दिन में चार-पांच बार मुंह धोने से आंखों की रोशनी में इज़ाफ़ा होता है एक यूरोपियन डॉक्टर ने मकाला लिखा जिसका नाम था "आई वाटर हेल्थ" जिसमें उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अपनी आंखों को दिन में मुताअद्दिद बार धोओ वरना खतरनाक बीमारियां हो सकती हैं। चीनी माहेरीन के मुताबिक चेहरा धोने से छोटी आंत, बड़ी आंत, सीना वगैरह पर भी अच्छे असरात मुरत्तब होते हैं। जबकि मज़हबे इस्लाम में पांचों वक्त की नमाज़ में बुज़ू बमन्ज़ला ए शर्त के हैं और नमाज बमन्ज़ला ए मशरूत के और बुज़ू की इब्तिदा भी हाथों को गट्टों तक धोने से होती है जो की आला

तहारात है। इसी तरह मिस्वाक़ करना भी ज़रूरी करार दिया गया है यहां तक कि मिस्वाक के साथ पढ़ी गई नमाज़ बगैर मिस्वाक के पढ़ी गई नमाज़ से 25 गुना फज़ीलत रखती है नेज़ मज़मज़ा (कुल्ली करना), इस्तिनशाक़ (नाक में पानी चढ़ाना) और तखलील ए असाबेअ़ (उंगलियों में खिलाल करना) भी इसका जुज़्बे तरकीबी है यह सब इस इसी हुक्म "الطهارة نصف الايمان" की शुआअ बेज़ी, ज़िया पाशी और ज़ौ फिशानी है।

इस्लाम में जिस्म समेत अपने आसपास, घर, मकान, ज़ाहिर और बातिन साफ रखने का भी हुक्म है। खुद नबी ए करीम ﷺ घर में झाड़ू दे लेते थे। इस तरह लिबास में सफाई सुथराई और ज़ाहिरी शक्ल और सूरत में भी पाकीज़गी की ताकीद है। बदन को मैला कुचैला और बालों को परागंदह रखना कि शक्ल वहशियों जैसी हो नापसंदीदा है। नबी ए करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया:

"إن الله يبغض الوسخ والشعث"

(فيض القدير شرح الجامع الصغير للمناوى، جزيرة:۲، ص:۲۸۵، ح:۱۸۵۵)

मनसूबे और इकदामाद:

कसाफत और गंदगी हज़ार बीमारियों की जड़ है, और तहारत और नज़ाफत हजार दवाओं की एक दवा है, हम ज़ेल में आवाम और खवास के लिए चंद लाहे अमल पेश करते हैं जो सेहत और तंदरुस्ती और फिज़ा को खुशगवार बनाने में मोअस्सर होगा:

(1) किसी जगह गंदा पानी जमा ना रखें क्योंकि यह मच्छरों और मक्खियों की अफज़ाइश का सबब है, जिससे मलेरिया, और हैज़ा फैलने के खतरात लाहिक़ होते हैं और साफ पानी को भी ढक कर रखें।

(2) घर के अंदर गुसलखाना और बैतुल खला ऐसी जगहें हैं जहां हर रोज़ हल्की-फुल्की सफाई की जानी चाहिए, इसके अलावा हफ्ता 10 दिन में मुकम्मल तौर पर अच्छी सफाई होनी चाहिए।

(3) अपने इर्द-गिर्द गली, मोहल्ला को साफ सुथरा रखें, घर का कूड़ा करकट सड़क पर हरगिज़ ना फेंके।

(4)कूड़ा करकट जमा करने के लिए खुसूसी मक़ामात का ताय्युन किया जाए।

(5)अपने इलाके की माहोलयाती कमेटी और सफाई अमला का तआब्बुन करें।

(6) अपनी तालीमी इदारों के माहोलयाती क्लब में शामिल हों।

(7)हफ्ता वाराना या 15 रोज़ा नशिस्त का एहतमाम करें।

शोबा ए तहक़ीक़

धर्म, दीन और मज़हब में क्या फर्क है?

:मुहम्मद फैज़ुल आरफीन रज़वी

इनमें फर्क उनकी तारीफ से वाज़ेह तौर पर मालूम हो जाता है। धर्म के बहुत से मायने आते हैं जिनमें से बाज़ यह हैं

(1)फर्ज़ (2) मज़हबी फरीज़ा (3)दस्तूरे रस्म (3)कायदा (5)रविश।

उर्दू लुगत में धर्म का मायना दिया है पक्का हुक्म या कानून, ईमान और अकीदा।

धर्म के जितने भी मायने लुगात में दिए गए हैं उन सब में फ़र्ज़ की अदायगी और ज़िम्मेदारी को निभाने का मफहूम क़दरे मुश्तरक है। जिसका ताल्लुक समाज और अख़्लाक़ और दुनियावी निज़ामे अमल से ज़्यादा होता है धर्म को अंग्रेज़ी में ड्यूटी से ताबीर किया जाता है।

मुख्तलिफ हैसियात से हर फर्द का अपना फ़र्ज़, जिसकी अदायगी समाजी और अख़्लाक़ी तौर पर होनी चाहिए या किसी शय का अपनी सिफत और खुसूसियत के साथ काम करना, धर्म है, जैसे मां-बाप की खिदमत करना औलाद का धर्म है, शागिर्द को तालीम देना उस्ताद का धर्म है वगैरह।

इंसानियत या वतनियत के उसूलों पर अमल करना धर्म है। इसे दूसरे अल्फ़ाज़ में तर्ज़ ए ज़िन्दगी, जीवनधारा भी कहा जा सकता है। धर्म कोई खुदाई उसूल या अकीदा नहीं जो गैर माद्दी मा फौक़ल फितरी, रूहानी ताकत से मुनस्लिक हो।

धार्मिक लुगात और हिंदू फलसफे में धर्म के ऊपर खासी तवील बहस मिलती है। जिसका खुलासा यह है कि धर्म ऐसे उसूल और तर्ज़ ए हयात का नाम है, जो अफराद के कामों में

तंज़ीम और हम आहंगी पैदा करता है। एक समाज के फर्द की हैसियत से उनमें एहसासे ज़िम्मेदारी पैदा करता है और उसके ज़रिए इंसान में तदरीजी इरतिक़ा पैदा करता है और इंसानियत के आला मकासिद के हुसूल में मुआविन बनता है।

मशहूर डॉक्टर गोपाल ने कहा: धर्म फ़र्ज़, हुस्ने सीरत और खूबी से इबारत है, जिसका मक़सद सारी ज़ी रूह की हिफाज़त है इस लिहाज से धर्म उन अख़्लाक़ी उसूलों का नाम है जिनके असरात जिंदगी पर कुछ इस तरह पड़ें कि वह सारी ज़ी रूह की इयानत और हिफाज़त करें और किसी को किसी तरह का नुकसान ना पहुंचाएं यानी इंसान को इज्तिमाई और इनफिरादी ज़िंदगी में जिन आला अख़्लाक़ी क़दरों को मान कर चलना चाहिए धर्म उनका मजमुआ है।

इस लिहाज से धर्म के दो पहलू सामने आते हैं:

(1)आलमगीर (2)समाजी।

आलमगीर उसूलों के मुताबिक तमाम इंसानों और ज़माने के लोगों को हिदायत मिलती है। समाजी पहलू यह बताता है कि अख़्लाक़ी क़वानीन, इनफिरादी और सामाजिक ज़िंदगी में बरतना हर शख्स के लिए ज़रूरी हैं। उसके नतीजे में धर्म का अहम मकसद हो जाता है इंसानों की मुख्तलिफ ख्वाहिशात और रुजहानात में हम आहंगी और नज़मो ज़ब्त पैदा करना।

धर्म की अलामतें और मज़ाहिर:

मज़कूरा मक़ासिद के हुसूल के लिए धार्मिक लिहाज़ से दस चीज़ों पर अमल करना होगा। इन दस चीज़ों का ज़िक्र महाभारत में किया गया है।

(1)तहम्मुल

(2) अफ्व और दर- गुज़र

(3)रहम दिली

(4) दिल पर काबू

(5)चोरी ना करना

(6)अमली रवय्ये में खुलूस

(7) ख्वाहिशात पर कंट्रोल

(8)अक्ल का इस्तेमाल

(9)ज्ञान

(10)बाहमी नफरत ना करना।

इन तमाम उमूर का ताल्लुक अख़्लाक़ियात और समाज से है अलबत्ता आवामी तौर पर अच्छे बदले की उम्मीद के साथ कोई काम करना धर्म है।

दीन और मज़हब:

दीन का मायना है लुगत में मज़हब, मसलक, ईमान

मज़हब का मायना है रास्ता, ईमान, मिल्लत। जब के अरबी ज़ुबान और लुगत में दीन के मफहूम में जज़ा, खुद को सुपुर्द कर देना, इताअत, बदला देना, हुक्म मानना, शरीयत की पाबंदी शामिल है।

इस्तेलाह में दीन वो पैगाम, हिदायत नामा, हुक्मनामा है। जिसे अल्लाह तआला ने पैगंबरों के ज़रिए इंसानों की हिदायत, कायनाते खुदा और इंसान के माबैन सही रास्ते की निशानदेही करने और खुदा, आखिरत, रिसालत वगैरह जैसी बुनियादी उसूली बातों को तस्लीम करने के लिए नाज़िल किया है और यह अल्लाह के सामने खुद को आखिरी हद तक झुका देने से इबारत है। ताकि आखिरत में रज़ा ए इलाही हासिल हो और खुदा और रसूल की मर्ज़ी उनके बताए तरीके के मुताबिक आमाल और रसूम की अदायगी और ममनुआत और मुहर्रमात से बचना शरियत है। यह दीनी तक़ाज़े के तौर पर ज़िंदगी के तमाम शोबों को मुहीत है इनफिरादी तौर पर भी और इज्तिमाई तौर पर भी।

किताब और सुन्नत और अरबी ज़ुबान और इस्तेलाहात के लुगात की रोशनी में दीन का यह मफहूम और तसव्वुर सामने आता है। इस तारीफ में लाज़मी अक़ाइद और आमाल सब आ जाते हैं। मज़हब भी अब उसी मायने में इस्तेमाल होने लगा है। लेकिन इन दोनों (दीन और मज़हब) में थोड़ा फर्क है। दीन वो होता है जो पूरी ज़िंदगी के बारे में रहनुमाई करें यानी उसके अंदर अक़ाइद, इबादात, रुसूमात, मुआमलात, सियासत और मुआशरत अलगर्ज़ दीन वो है कि जिसमें इनफिरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी के बारे में बदर्जा अतम रहनुमाई मौजूद हो।

मज़हब वो है कि जिसमें सिर्फ इनफिरादी ज़िंदगी के बारे में रहनुमाई मौजूद हो यानी उसमें सिर्फ अक़ाइद, इबादात और चंद रुसूमात होती हैं।

नफ़रत के परवरदा जराइम की बढ़ती तादाद

फरदीन अहमद खान रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

जराइम का बाज़ार इस माद्दा परस्त दुनिया में गर्म है, शायद ही कोई इस बात से इंकार करें कि यह हमारा बद उनवान मुआशरा ही है जो दरअसल जराइम को पनपने की जगह और मौका फराहम करता है। और फिर जब कोई बा इसमत शहरी उनका शिकार हो जाता है तो झूठे आंसू रोकर और बड़े नाज़ और नखरे से मैं उस हरकत की मज़म्मत करता हूं कहकर पल्लू झाड़ लेता है। जोरो जफा की आमाजगाह बनी ये दुनिया और उसके रहने वाले इतने बेहिस और संगदिल हो चुके हैं कि उन्हें मसलन तब तक किसी के जीने मरने और क़बीह तरीन जराइम के होने से कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक वो बा वास्ता या बिला वास्ता खुद उससे मुतासिर नहीं होते। यही वजह है कि अक्सर जराइम के मुतास्सिरीन और हवादिस ज़दा अफ़राद की झोली में अहले इक़तिदार की मुफ्त की मज़म्मत ही आती है और अगर किस्मत साथ ना रहे तो यह भी नहीं मिलती। इंसाफ की लैला के पीछे मजनू बने कितने ऐसे हैं जो आपको कोर्ट , कचहरी के दरवाज़े पर खड़े मिल जाएंगे, दिल में यह आस लिए हुए के अभी वो पैकरे इंसाफ, इज़्ज़त मआब, आली जनाब आएंगे और मुझे इंसाफ की चादर उढ़ाकर मेरे बरहना बदन को ढांक देंगे मगर हाय अफसोस! कि अकसर ऐसा कुछ नहीं होता और वह गरीब अहले समाअत की हमदर्दी की लॉलीपॉप मुंह में दबाए घर को लौट जाता है और करे भी तो क्या करे बेचारा, इस समाज में यह लिखा पढ़ी, साहेबान सरवत ही की दौलत कदे की वज़ीफा ख्वार है, जब चाहते हैं काम पर लगा देते हैं और जब चाहते हैं एक लंबी छुट्टी पर भेज देते हैं फिर

अगर यह रंगारंग किस्म के कपड़े और बदन पर सितारे सजाए हुए हज़रात भी अपना काम ठीक से करें तो कुछ दर्द ए आदम का मदाबा हो मगर नहीं, उनकी वफादारियों भी फॉर सेल (फरोख्तनी) होती हैं

इस पर मुसतज़ाद (मज़ीद) ये है की, इक़तिदार के नशे में बदमस्त लोगों को एक चांदी का उगालदान भी मिल गया है जिसे चंद कौड़ियों में रोड से खरीदा, और जब चाहा मज़म्मत की पीक थूक दी। लीजिए साहब! फ़र्ज़े मनसबी भी बा हुस्ने खूबी अदा कर दिया गया! और आप खामाख्वा कह रहे थे कि हमें इंसानियत का दर्द नहीं।

जुर्म के पीछे अगर कोई दिमागी तवाज़ुन से आरी नंगे इंसानियत हो, या कोई परले दर्जे का लुच्चा बदमाश हो तो फिर भी लोगों को सब्र आ जाता है, मगर हैरत और इस्तिजाब की परवाज़, खला को तब पार कर जाती है जब यही काम एक आम शहरी, एक नौजवान लड़का, एक काम काज करने वाला शख्स कर गुज़रता है। अक्सर लोग जराइम पर तवज्जो मरकूज़ करते हैं, मुजरिम से तो कुछ दिलचस्पी दिखा देते हैं मगर उसके असबाब और इलल पर चंद ही की नज़र जाती है, यह असबाब हर जुर्म में कलीदी किरदार अदा करते हैं। यही वजह है कि अगर असबाब की मारिफत हासिल हो गई तो आइंदा के जुर्मों पर भी क़द्देगन लगाया जा सकता है।

आलमी मन्ज़र नामे का अगर अमीक़(गहरा) जाएज़ा लिया जाए तो ये हकीक़त सतहे ज़हन पर तुलूअ होगी कि इस वक़्त के जराइम में एक अच्छी खासी और बढ़ती तादाद नफ़रत के परवरदा जराइम की है जिन्हें नफरत अंगेज़ जराइम भी कहा जाता है, वह जुर्म जो किसी खास क़ौम, नस्ल और मज़हब के लोगों के खिलाफ अंजाम दिए जाते हैं। इसकी मिसाल माज़ी बईद में एडोल्फ हिटलर की यहूदियों के खिलाफ दिल दहला देने वाली कार्यवाही और ततहीरे अर्क (Ethnic Cleansing) की तहरीक थी, जहां सैकड़ों यहूदी

लुक़्मा ए अजल बने, इन्हें तरह-तरह की अज़ीयतें दी गई और एक बड़े पैमाने पर कत्ले आम किया गया। माज़ी करीब में इसकी मिसाल मुसलमानों के खिलाफ आलमी पैमाने पर होने वाले सफ्फाकी हमले हैं जिनमें बेगुनाह मुस्लिम खून बहाया जाता है, भारत में "मॉब लिंचिंग" के वाकियात हों या मगरिबी ममालिक में 'इस्लामोफोबिया' के तहत मुनज़्ज़म नस्ल कुशी, मसाजिद और मज़ारात पर बुजदिलाना यलगार हो या शाम और फिलिस्तीन में अवाम पर कीमियाई बमबारी; गर्ज़ यह के मौजूदा वक्त में मुसलमान खून सस्ता और मिस्ले पानी के हो चुका है आलमी बिरादरी में इस खून की अब कोई कीमत नहीं रह गई है। फ़कीर ने इस पर यह क़तआ कहा था कि,

छोड़ी है जब से मर्दे मुसलमां ने रज़्मगाह

इंसानियत की गोर पर मगरिब है खंदा ज़न

ज़ुल्मों सितम, दरेग की आतिश है हर जिहत

मुस्लिम का खून हो गया पानी के हम वज़न।

फिर अगर इन जराइम के असबाब और इलल का जायज़ा लिया जाए तो मालूम चलता है कि इनमें अहम तरीन सबब है "इस्लाम और अरबों के खिलाफ नफरत अंगेज़ी" जिस पर फकीर एक तहकीकी मकाला बाउनवान: "इस्लामी सकाफत के खिलाफ आलमी महाज़" तहरीर कर चुका, इसमें असबाब और इलल पर सैर हासिल बहस की गई है और बताया गया है कि कैसे अवाम के कुलूब में इस्लाम और अरब नस्ल के लोगों का खौफ नक्श किया जाता है। खैर,

बात जराइम की चल रही थी, तो अब यह अर्ज़ कर रहा था कि जब जराइम कोई आम शख्स इसी नफरत अंगेज़ी के ज़ेरे असर आकर या शावनियत के जज़्बात के तहत कर

गुज़रता है तो वो जुर्म बिल्कुल भी काबिले फरामोश नहीं रहता, बल्कि ज़रूरत इस अम्र पर गौरो फिक्र की होती है कि वह कौन सी साज़िश और मुआशरे के जिस्म पर पनपता कौन सा ज़हरीला फफोला है जो इस जुर्म का पेश खेमा साबित हुआ इस मज़मून में हम इन्हीं जराइम और आलमी इदारों की ज़िम्मेदारी पर गुफ्तगू करेंगे।

तारीख के सियाह अबवाब:

दामने तारीख ऐसे सुर्ख और सियाह दागों से भरा पड़ा है जहां किसी एक नस्ल के खिलाफ महाज़ आराई की गई हो, किसी एक मज़हब के अफ़राद को निशाना ए तशद्दुद बनाया गया हो, मुनज़्ज़म तौर पर किसी एक ज़ुबान या रंग के अशख़ास को सफ्हे हस्ती से मिटाने की कोशिश की गई हो, मगर यह जितनी भी तहरीकात थी किसी एक खित्ते और इलाके तक महदूद थीं, किसी ने भी एक फिक्र और नज़रिये का रूप नहीं लिया, लेकिन आज जो हम मुस्लिमों के खिलाफ ज़ुल्मो सितम की दास्तान देख रहे हैं यह एक आलमी फिक्र का कालिब ओढ़कर एक हमागीर वायरस की शक्ल इख्तियार कर चुकी है। अमेरिका में 9/11 हमले के बाद मुसलमानों को मुल्क का दुश्मन गर्दाना जाने लगा और शावनियत परस्तों को मज़ीद मौका मिला के मुसलमानों की छवि को मुकम्मल तौर पर सबोताज कर दें, जगह-जगह मुल्क में मुस्लिम मुखालफीन हमले किए गए और कई अफराद,ख्वातीन और बुज़ुर्गों को बेगुनाही की सज़ा ए मौत सुनाई गई। यहां तक के एफ आई आर की रिपोर्ट के मुताबिक साले गुज़िश्ता के मुकाबले जहां महज़ 28 मामलात मुस्लिम मुखालिफ तशद्दुद के दर्ज किए गए थे साल 2001 में ऐसे कुल 481 मामले दर्ज किए गए।

हर साल यह तादाद कभी 120 से नीचे नहीं आई यानी यूं कहें तो गलत ना होगा कि इसके बाद मुसलमानों के खिलाफ ज़ुल्म और तशद्दुद अमेरिकी मुआशरे के रोजमर्रा(Daily Norms)में शामिल हो गया!

फिर अगर हिंदुस्तान का जायजा लिया जाए तो तस्वीर चंदा मुख्तलिफ नहीं, हां तशद्दुद करने वालों के नाम ज़रूर क़दरे अलग होंगे मगर जैसे वहां बंदूक के दूसरे कोने पर अब्दुल्लाह था यहां भी लाठी के दूसरे कोने पर आपको कोई निगार अहमद, या सलीम अंसारी ही मिलेगा।

आदाद और शुमार के एतिबार से देखें तो हिन्दुत्वा के नज़रिए की हामी बीजेपी के इक़्तिदार में आने के बाद 2015 से 2019 तक दर्ज शुदा मामलात में से 113 अफराद दाई ए अजल को लब्बैक कह चुके हैं, दादरी के मुहम्मद अख़लाक (2015) से लेकर अलवर के पहलू खान (2017) हरियाणा के हाफ़िज़ जुनैद (2017) और आसाम के शौकत अली (2019) तक यह तो वह अफराद हैं जिनकी सिसकियां आवामी हल्क़ो तक किसी तरह गिरती पड़ती पहुंच गई, मगर उन नामालूम अफराद का क्या जिन की चीखें दरो दीवार से टकराकर दस्ते अदम में गुम हो गईं। यानी मुतास्सेरीन की तादाद इससे यक़ीनन कहीं ज़्यादा है मतलब यह कि गंगा जमनी तहज़ीब वाले भारत में भी अब आवाम के दिलों में किसी हद तक मुस्लिम मुखालिफ ताकतों ने ज़हर घोल दिया है, इस क़दर मुसलमानों पर जारेहियत और बर्बरियत के पहाड़ टूटने के बावजूद दूसरे ख़ेमे से कोई भी इंसान दोस्त आवाज़ बुलंद करने को तैयार नहीं, लगता है इस दुनिया में अब खून बहाना क़तअन बजा है, जब तक के जिसका खून बह रहा हो उसके नाम के आगे मोहम्मद या अहमद लगा हो।

आपको याद होगा कि 2019 में न्यूज़ीलैंड के शहर क्राइस्ट चर्च में जुमा मुबारक के दिन, दो मसाजिद में बेगुनाह मुस्लिमों पर बेतहाशा गोलियां चलाई गई थी, 50 लोग जान बाहक हुए थे और 50 ज़ख्मी, जिनमें मर्द, औरतें, बच्चे हत्ता के बुज़ुर्ग और अइम्मा ए मसाजिद भी शामिल थे। हमलावर, सफेद फाम नस्ल परस्ती के नशे में बदमस्त एक शख्स था जिसके चेहरे पर गिरफ्तारी के बाद नदामत की क़ालो क़ील नज़र नहीं आ रही थी। हुक्काम ने उसे मुल्क का सियाह दिन करार दिया था

इस तरह के मुताअद्दिद वाकियात तारीख के दामन में सियाह दागो के मानिंद मौजूद हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि इस दुनिया की नज़र में मुसलमानो का खून कितना सस्ता और उसकी जान कितनी बेकीमती हो चुकी है।

हालिया अहवाल:

काबिले अफसोस बात है कि इस खूंरेज़ माज़ी से मौजूदा हाल का आलम ज़रा भी मुख्तलिफ नहीं, बल्कि मुस्लिम मुखालिफ साजिशों और नफ़रत के परवरदा जराइम में रोज अफज़ूं इज़ाफ़ा होता जा रहा है। हाल के ना-गुफता बेहि हालात का एक सरसरी जायज़ा मुलाहिजा फरमाएं।

गुज़िश्ता माह मई में फिलिस्तीनी गाज़ा की पट्टी में, इस्राईली फौज ने एक ज़ोरदार हमला किया जिसमें तकरीबन 200 से ज़्यादा बेगुनाह फिलिस्तीनी शहरी लुकमा ए अजल बने जिनमें 60 नौनिहाल थे, यही नहीं बल्कि कई घरों, इमलाक और ज़राए अबलाग के दफातिर को भी बमबारी का निशाना बनाया गया। गो कि फिलिस्तीनी असकरी गिरोह ने भी इस हमले का जवाब अपनी ताकत भर दिया और बाद में जंग बंदी का ऐलान भी हुआ मगर फिलिस्तीनी मुसलमानों का बड़े पैमाने पर जानी और माली नुकसान हो चुका था।

माहे रवां, 16 जून 2021 को एक फिलिस्तीनी तिब की तालिबा माई अफनाह को इस्राइली असकरी ने गोली मारकर मौत के घाट यह कहकर उतार दिया कि वह फौजी अश्ख़ास पर गाड़ी चढ़ा कर हमला करने की कोशिश कर रही थी। हैरानकुन बात है कि 29 साला नौजवान तालिबा के मन में ऐसे ख्याल क्यों कर आ सकते हैं? हां मुमकिन है कि वो किसी ज़ख्म रसीदा की मिज़ाज पुर्सी के लिए पहुंची हो, जो कि उसकी तालीम का समरा और मुस्तकबिल का पेशा था, जहां उसे निशाना ए तशद्दुद बनाया गया।

दुनिया के दूसरे कोने में कनाडा मुकीम एक हिंदुस्तानी मुस्लिम खानदान पर 7 जून 2021 को ट्रक चढ़ाकर जारेहाना हमला किया गया जिसमें खानदान के चार अफराद दारे फानी से कूच कर गए और एक शदीद तौर पर ज़ख्मी हुआ। इस हमले के पीछे पुलिस की तफ्तीश के मुताबिक मुस्लिम मुखालिफ जज़्बात कार फरमा थे और हमलावर ने यह जुर्म नफ़रत के ज़ेरे असर आकर अंजाम दिया। आला हुक्काम ने इस जुर्म की पुरज़ोर मज़म्मत की और हमलावर को गिरफ्तार कर लिया गया है। काबिले गौर है कि कनाडा के प्राइम मिनिस्टर ने इस हमले को दहशतगर्दी करार दिया है जोके सज़ावार सताइश है।

हिंदुस्तानी फिज़ाओं का अगर जायज़ा लें तो, 5 जून 2021 को उत्तर प्रदेश के एक मुस्लिम बुज़ुर्ग अब्दुल समद सैफी को चंद हमलावरों ने अगवा कर लिया और उन्हें जंगल में ले जाकर बेतहाशा मारा और पीटा, उनके मुताबिक उन्हें हिंदू धर्म के नारे लगाने पर मजबूर किया गया और उनकी दाढ़ी कैंची से काट दी गई और दौराने मार-पीट उनके सर पर बंदूक रखकर जान से मारने की धमकी भी दी गई। पुलिस मामले की तफ्तीश में लगी है और एक मुजरिम को गिरफ्तार भी कर लिया गया है, बाद में पुलिस ने उस वाकिये का मज़हब से ताल्लुक होने का इंकार किया और उसे वाहमी रंजिश का मामला बताया है।

क़ारेईन ए किराम! यह दुनिया का आलमी मंज़र नामा माज़ी और हाल के आईने में, जिसमें आप बहुत अच्छी तरह देख सकते हैं कि इस तरह मुसलमानों के खिलाफ दहशतगर्दी, नस्ली और मज़हबी इम्तियाज़ और ज़ुल्म और बर्बरियत का बाज़ार गर्म है; अब एक दूसरी सिमत आपकी तवज्जोह का रुख मोड़ना चाहुंगा।।

इस्लाम मुखालिफ असबियत, एक ज़िन्दा हकीक़तः

यह तमाम वाकियात इस बात पर शाहिदे अदल हैं कि इस दौर में मुसलमानों के खिलाफ आलमी पैमाने पर इंसानी मुआशरे में असबियत और इम्तियाज़ी रवैया सिराअत कर चुके हैं, चाहे वो बरतानिया हो या हिंदुस्तान, फ्रांस हो के अमेरिका, जहां नज़र डालें मुसलमानों पर जबर और सितम के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं और आलमी बिरादरी खामोश तमाशाई बनी देख रही है

मुसलमानों के खिलाफ नफरत अंगेज़ जज़्बात की आज़माइश मुआशरे में इतनी बढ़ चुकी है कि इम्साल 4 मार्च को अक़वामे मुत्तहेदा में इंसानी हुकूक के एक माहिर जनाब अहमद शहीद ने बरतानिया की चंद रिपोर्टों का हवाला देते हुए, जिन में कहा गया था कि 2018 और 19 में 10 में से 4 अफराद मुसलमानों के बारे में मनफी तस्सुरात रखते थे, कहा कि मुस्लिम मुखालिफ नफ़रत अंगेज़ी अब वबाई तनासुबात की शक्ल इख्तियार कर चुकी है।

17 मार्च 2021 को तंज़ीम तआवुने इस्लामी (ओ-आई-सी) के ज़ेरे एहतिमाम मुनअक़िद "इस्लामोफोबिया से मुकाबले का आलमी दिन" में खिताब करते हुए अक़वामे मुत्तहिदा के सेक्रेटरी जनरल एंटोनियो गिटर्स ने भी रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि तनव्वोअ़ दौलतमंदी है खतरा नहीं, और इस बात का भी एतिराफ किया कि मुसलमानों के खिलाफ दुनिया भर में शुकूक, इम्तियाज़ी रवैया और खुली नफरत वबा की मानिंद फैल रही है_

दर्ज बाला हक़ाइक, वाक़ियात, आदाद और शुमार, अख़बार और आलमी तंज़ीमों के सरबराहों के एतिराफात से ये बात दोपहर के आफताब की तरह रौशन हो जाती है कि आलमी पैमाने पर इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ असबियत, नफ़रत अंगेज़ी, इम्तियाज़ी रवैया, और मुनज़्ज़म तशद्दुद कोई किस्सा कहानी की बातें नहीं बल्कि एक ज़िन्दा हकीक़त है।

इदारात हुक़ूके इन्सानी और हुकूमतों की ज़िम्मेदारियां:

जब इस अमर की तहकीक शवाहिद की रोशनी में तस्लीम कर ली जाए कि हां वाक़ई इस नाम निहाद तरक्की पसंद और आजाद दुनिया में आज भी एक ख़ास मज़हब से मुनस्लिक अफराद के खिलाफ दकयानूसी फिक्र खुली हवा में सांस ले रही है, तो ज़रूरी है कि इंसानी हुक़ूक की मुहाफिज़त का दम भरने वाले इदारे अपने फराइज़े मनसबी का एहसास करते हुए आगे आएं और उसके खिलाफ आवाज़ बुलंद करें।

आपको जान कर शायद हैरानी हो कि दुनिया के लगभग हर कोने में इंसानी हुक़ूक की हिफाज़त और सियानत के लिए एक मुल्की इदारा बराए हुक़ूके इंसानी मौजूद है, और उसका एक आलमी राबता और सरपरस्त इदारा है जिसे (गन-हरी) या मुल्की इदारात बराए हुक़ूके इंसानी का आलमी इत्तेहाद भी कह सकते हैं। इस की एक रिपोर्ट के मुताबिक मौजूदा वक्त में उसके तहत 117 इदारे काम कर रहे हैं।

अक़वामे मुत्तहेदा, इदारा ए हुक़ूके इंसानी, तंज़ीम तआवुन ए इस्लामी, आलमी राबता ए इस्लामी, और गन-हरी के तहत ये 117 इदारे वगैरह, सब अपने तौर पर कहीं मुस्लिम तो कहीं इंसानी हुक़ूक की हिफाज़त का दम भरते हैं, इन्हीं अग़राज़ो मक़ासिद के तहत मआरिज़े वुजूद में आए हैं, मगर निहायत अफसोस की बात है कि इसके बावजूद दुनिया में मुस्लिम मुखालिफ तशद्दुद का गिराफ़ रोज़ नई ऊंचाईयों को छू रहा है।

यहां हम बहुत अदब के साथ चंद तजावीज़ उन इदारों और कुछ मुसबत इक़दामात और मशवरे हुकूमतों के लिए पेश करना चाहेंगे कि जिस से मुसलमानों की जानी, माली और इंसानी हुक़ूक की हिफाज़त हो सके।

- तमाम ममालिक बिल उमूम और जहां ये वाकियात ज़्यादा पाए जाते वहां बिलखुसूस इस्लाम मुखालिफ नफ़रत आमेज़ी और असबियत के खिलाफ सख्त क़ानून बनाए जाएं और जहां पहले से ऐसे क़वानीन हैं उन्हें मज़ीद इस्तेहकाम के साथ नाफिज़ किया जाए।
- ऐसे हादिसात के मुतास्सिरीन के लिए सरकारी दफ़्तर (ग्रेवियन्स सेल) मुल्की पैमाने पर मौजूद हों जहां से मुतास्सिरीन को इंसानी इमदाद फराहम की जा सके।
- अमन और मोहब्बत के पैगाम पर मबनी लिटरेचर, कुतुब और रसाइल को फरोग दिया जाए ताकि अवाम की मुसबत ज़हन साज़ी की जा सके और नफ़रत और ताअस्सुब के दूद को सच का उजाला दूर करे।
- हर ऐसे लिखारी, टी-वी चेंनल, और अख़बार को पहले पहल वार्निंग और न मानने पर शदीद माली जुरमाना और पाबंदी लगाई जाए जो मज़हबी इम्तियाज़ को फरोग देता हो।
- ऐसे अफराद और तंज़ीमों पर कड़ी नज़र रखी जाए जो तशद्दुद और इन्तेहा पसंदी का बिलवास्ता या बिलावास्ता प्रचार करते हों।
- इंसान दोस्त मुसन्निफ हज़रात, कलम निगार, एडिटर हज़रात और खबर रसां इदारों के मालिकान ऐसे मज़ामीन मक़ालात और तज्ज़ियों से अव्वलन तो खुद परहेज़ करें जो किसी तरह के इम्तियाज़ को फरोग दें और अगर उनके साथी ऐसा कोई मज़मून लिखें तो उसे कड़ी निगाह से सेंसर कर के और हर तरह के ताअस्सुब से पाक करके नशर किया जाए।

- मशहूर मुस्लिम अफराद को चाहिए कि जहां भी प्लेटफार्म मयस्सर आए वहां से आलमी अमन का पैगाम ज़रूर दें और दीगर अक़वाम को ये तअस्सुर दें कि वो मुसलमानों के खून और जान की अहमियत को पहचानें।

इस किस्म की मुसबत और तामीरी तजावीज़ को अमली जामा पहनाने और आलमी सतह पर अवाम की सही रहनुमाई करने से मुझे उम्मीद है कि काफी हद तक ज़ुल्मो सितम के इस तूफान को रोका और इसके ज़रिए किए गए इंसानी नुकसान को मुख्तसर से मुख्तसर किया जा सकता है।

नतीजा ए कलाम और इख्तिताम बहस:

खात्मा ए बहस पर चंद बातें ज़हन में रखना बेहद ज़रूरी है:

- मौजूदा वक्त में दुनिया क़बीह तरीन जराइम की आमाजगाह बनी हुई है जिस से लोग बेहसी और संगदिल के शिकार हैं।
- जराइम का शिकार अफराद और हवादिस के मुतास्सिर अक्सर अदल और इंसाफ से महरूम रह जाते हैं जिसकी वजह मुताल्लिक़ा इदारों और अफसरान की बद-उनवानी है।
- इस वक्त के जराइम में एक अच्छी खासी और बढ़ती तादाद नफ़रत के परबरदा जराइम की है।
- माज़ी करीब में इसकी मिसाल मुसलमानों के खिलाफ आलमी पैमाने पर होने वाले सफाकी हमले हैं।

- भारत में मॉब लिंचिंग के मामलात, मगरिबी ममालिक में इस्लामोफोबिया के तहत मुनज़्ज़म नस्ल कुशी, मसाजिद और मज़ारात पर बुज़दिलाना यलगार और शाम और फिलिस्तीन में अवाम पर कीमीयाई बमबारी इन्हीं जराइम के उकूस हैं।
- इसका अहम तरीन सबब है "इस्लाम और अरबों के खिलाफ नफ़रत अंगेजी"।
- तारीखी हकाइक में 9/11 के बाद अमेरिका में मुसलमानों के खिलाफ तशद्दुद, 2019 में न्यूज़ीलैंड के शहर क्राइस्ट चर्च में जारिहाना हमला, भारत में मुनज़्ज़म तरीके से मॉब लिंचिंग में 113 अफराद की हलाकत, इसी हकीक़त की मुंह बोलती तस्वीर हैं।
- हाल का जायज़ा लें तो इस्राईली दहशतगर्दी, फिलिस्तीनी अवाम का कत्लेआम, भारत में मुस्लिम बुज़ुर्ग के साथ बदसलूकी, कनाडा में मुस्लिम खानदान के खिलाफ नफ़रत अंगेज़ हमला वगैरह ज़मीनी शवाहिद हैं।
- यह तमाम शवाहिद इस बात के गवाह हैं कि मुसलमानों के खिलाफ आलमी पैमाने पर असबियत और इम्तियाज़ी रवैया सिरायत कर चुके हैं।
- ज़रूरते वक्त है कि इंसानी हुकूक के मुहाफिज़ इदारे अपने फराइज़े मनसबी का एहसास करें और उसके खिलाफ आवाज़ बुलंद करें।

इन हक़ाइक से किसी हद तक शनासाई हासिल करने के बाद, मुझे बा वुसूक़ उम्मीद है कि क़ारी के ज़हन में इस मक़ाले का मक़सद और मनशा साफ ज़ाहिर हो गया होगा,और इस मुस्लिम मुखालिफ ज़र्बे कारी को रोकने के लिए जो तदाबीर बताई गई उनसे भी तवक़्क़ोआत वसीअ हैं कि वो अपने मक़सदे तखलीक़ को ब हुस्नो खूबी अदा करेंगे।

कोई कह सकता है कि इस आहो फगां से क्या हासिल के कौम तो ख्वाबे खाम में सो रही है, यह ख़ुश्क तहकीकात कौन गवारा दर मुतालआ करेगा और इससे कितना असर बरामद होगा? तो इस पर भी फकत मेरा इतना ही जवाब होगा कि

मुझे फितरत नवा पर पै बे पै मजबूर करती है

अभी महफिल में है शायद कोई दर्द आशना बाक़ी

अल्लाह तबारक व तआला से दुआ है कि इस कोशिश को कुबूल और इसे उम्मत के लिए चश्मे कशा और नफए रसां बनाए। आमीन!

शोबा ए तनक़ीद

पीरपरस्ती से आला है कुरआन और हदीस से दोस्ती

:सिब्तैन रज़ा महशर मिस्बाही,

शरियत और तरीकत दीन के दो रुख हैं, शरियत अरकान ए इस्लाम और अकाइद से मुताल्लिक हैं और तरीकत उन पर अमल करने से इबारत है। शरियत दीन का ज़ाहिरी पहलू है तरीकत दीन का बातिनी पहलू है, शरियत और तरीक़त एक दूसरे से गैर ज़रूर हैं मगर एक दूसरे की ज़िद नहीं, तरीक़त की निस्बत शरियत के साथ ऐसी है जैसी रूह की निस्बत जिस्म के साथ। यानी इस्लाम और ईमान की तरह एक दूसरे से मरबूत हैं मगर तरीक़त बे-शरियत मक़बूल नहीं। मिसाल के तौर पर इस तरह भी समझ सकते हैं शरई तहारत ये है कि बदन को पाक कर लें तरीकत की तहारत ये है कि दिल को तमाम बुराइयों से पाक कर लिया जाए।

कुरूने साबिक़ा में तरीकत की कोई ख़ास इसतिलाह न थी अलबत्ता दीन ए इस्लाम ही इसतिलाह थीं। जब असहाब ए फिक़्ह ने एहकाम के दर्जात बताने की गर्ज़ से इसतिलाहात कायम कीं उसी वक़्त सूफिया ए किराम ने भी इल्म ए तसव्वुफ में सुलूके अहद के दर्जात को ज़ाहिर करने की गर्ज़ से ये लफ्ज़ मुक़र्रर किए मसलन शरियत अकाइद और ज़ाहिरी एहकाम का नाम है जैसे नमाज़, रोज़ा, हज और तरीक़त, इन पर अमल करने में रियाज़त और मुजाहिदा ए नफ्स करना है। सूफिया इकराम इसी के ज़रिए मिल्लत के अफ़राद को मिल्लत से जोड़े रखते, अमली तौर पर इस्लामी रंगों रोगन पर ढालते, इसी के ज़रिए सब्र और शुक्र का दर्स ए अमल देते, हिर्स और तमअ़ से लोगों को दूर करते, लोगों के क़ुलूब में तक़वा और तहारत को उभारते बगैरह बगैरह।

इसी तरह सूफिया इकराम ने हल्क़ा में बैअत और इरशाद मारूफ बेहि (पीरी मुरीदी) के नाम से एक इसतिलाह की बुनियाद डाली जिस का मक़सद इताअत ए शरियत का अहद है लोगों की इस्लाह है। लफ़्ज़े "बैअ़त" अरबी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जो "बैअ़" से निकला है जिसका मायना सौदा करने के हैं, इसतिलाह में किसी मुकद्दस हस्ती या स्वालेह बुज़ुर्ग के हाथ में हाथ दे कर अपने गुनाहों से ताइब होने और उसकी इताअ़त के इक़रार का नाम बैअ़त है, दर हक़ीक़त मुरीद अपनी मर्ज़ी को मुर्शिद ए स्वालेह के हाथों बेच देता है जिसकी वजह से इस अमल को "बैअत" कहते हैं। ये एक दो तरफा मुआहिदा होता है जिसमें बैअत लेने वाला (पीर या मुर्शिद) तमाम नेक और जाइज़ उमूर में रहनुमाई का वादा करता है और बैअ़त करने वाला (मुरीद) नेक और जाइज़ उमूर में उसकी इताअ़त और पैरवी का इकरार करता है, बैअत (पीरी-मुरीदी) का मक़सद किसी मुकद्दस और स्वालेह हस्ती की रहनुमाई से बैअत करने वाला (मुरीद) अल्लाह तआला और उसके प्यारे नबीﷺ के नाराज़गी वाले कामों से बचते हुए फरमाने रब्बुल आलमीन के मुताबिक अपनी ज़िंदगी के शबों रोज़ गुज़ार सके ब-अलफाज़े दीगर बैअत का मक़सद बंदा शरियत ए मुताहिरा का आमिल, नमाज़ रोज़ों का पाबंद, बातिनी ततहीर, रूहानी पकीज़गी का हामिल हो जाए।

सहाबा ए किराम का हुज़ूर ﷺ के हाथ बैअ़त करना साबित है बुनियादी तौर पर बैअत की चार किसमें हैं,

(1) बैअ़त ए इस्लाम

(2) बैअ़त ए खिलाफत

(3) बैअ़त ए तक़वा

(4) बैअ़त ए तौबा

आजकल की बैअ़त, तौबा या तक़्वा की बैअ़त है, इस बैअत का माख़ज़ आने वाली आयत और उस जैसी दूसरी आयात हैं, चुनांचे हुदैबिया के मुकाम पर आप ﷺ ने सहाबा ए किराम عليهم الرضوان से बबूल के एक दरख्त के नीचे बैअ़त ली, इसको बैअ़त ए रिज़वान कहते हैं रब तआला का फरमान है:

"لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ"

(سورۂ فتح، آیت:18)

यानी बेशक अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हुआ जब वो दरख्त के नीचे तुम्हारी बैअत कर रहे थे।

रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबियात رضوان الله عليهن أجمعين से बैअत ली, ये ख्वातीन इस्लाम ला चुकी थीं और मुसलमान की हैसियत से बैअ़त ए तौबा और तक़्वा कर रहीं थीं। रब तआला का फरमान है:

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ یُبَایِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا یُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَیْـٴًـا وَّ لَا یَسْرِقْنَ وَ لَا یَزْنِیْنَ وَ لَا یَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا یَاْتِیْنَ بِبُهْتَانٍ یَّفْتَرِیْنَهٗ بَیْنَ اَیْدِیْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا یَعْصِیْنَكَ فِیْ مَعْرُوْفٍ فَبَایِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (سورۂ ممتحنہ، آیت:12)

ऐ नबी! जब मुसलमान औरतें तुम्हारे हुज़ूर इस बात पर बैअत करने के लिए हाज़िर हों कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी करेंगी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी और न वो बोहतान लगाएंगी जिसे अपने हाथों और अपने पैरों के दरमियान में गढ़ें और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत लो और अल्लाह से उनकी मगफिरत चाहो बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बड़ा मेहरबान है।

अहादीसे मुबारका में भी सहाबा ए किराम से बैअ़त का तज़किरा है:

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ أَصْحَابِهِ " بَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ، وَلاَ تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُوا فِي مَعْرُوفٍ، فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا ثُمَّ سَتَرَهُ اللَّهُ، فَهُوَ إِلَى اللَّهِ إِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ، وَإِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ فَبَايَعْنَاهُ عَلَى ذَلِكَ

यानी रसूल अल्लाह ﷺ ने उस वक़्त जब आपके गिर्द सहाबा की एक जमाअत बैठी हुई थी फरमाया कि मुझसे बैअ़त करो इस बात पर कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे और न कसदन किसी पर कोई नाहक बोहतान बाधोंगे और किसी भी अच्छी बात में (अल्लाह की) नाफरमानी न करोगे। जो कोई तुम में (इस अहद को) पूरा करेगा तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है और जो कोई इन (बुरी बातों) में से किसी का इरतिकाब करे और उसे दुनिया में (इस्लामी कानून के तहत) सज़ा दे दी गई तो ये सज़ा उसके (गुनाहों के) लिए बदला हो जाएगी और जो कोई उनमें से किसी बात में मुब्तिला हो गया और अल्लाह ने उसके (गुनाह) को छुपा लिया फिर उसका (मुआमला) अल्लाह के हवाले है, अगर चाहे माफ़ करदे और अगर चाहे सज़ा देदे। (उबादा कहते हैं कि) फिर हम सब ने उन (सब बातों) पर आप ﷺ से बैअत कर ली।

(सही बुखारी, किताब उल ईमान, बाब 18 अलामतुल ईमान)

रकम ए हदीस: हब्बुल अंसार, ज़िल्द 1:

ये बैअ़त इस्लाम कुबूल करने के लिए बाद बैअत ए तौबा और तक़्वा का बय्यन (खुला) सुबूत हैं जिसमें हुज़ूर ए अकरम ने शिर्क-बिल्लाह से तौबा करने का अहद लिया,

अख़लाक़ी बुराइयों से बचने और औलाद को क़त्ल न करने का वादा लिया बोहतान से बचने का भी वादा लिया आपने इस बात पर भी अहद लिया कि हर नेक काम में हमेशा इताअत करनी होगी। और यही सूफिया ए किराम और मशाइख़े एज़ाम की बैअ़त की असल और बुनियाद है क्यूंकि बुज़ुर्गाने दीन की बैअ़त का मक़सद यही है कि एक मुसलमान जो पहले ही इस्लाम के दायरे में दाखिल है वो गुनाहों से तौबा करे, ज़िक्र ए इलाही और इबादत में कमरे हिम्मत बांधे, दुनियावी लज़्ज़तों से किनारा कश हो कर रूजू ए इलाही करे और सब्र और साबित क़दमी से रूहानियत की मंज़िलें तय करे। ये बैअत ए तौबा और तक़वा मोमिनीन में दीन में तरक्की की गर्ज़ से हमेशा और हर हाल में जारी रही है।

बैअ़त का हुक्म ये है कि बैअ़त करना वाजिब और फ़र्ज़ नहीं, बल्कि मुस्तहसन और मुस्तहब है बैअ़त (मुरीद) करने से मुराद यही होता है कि किसी मुर्शिद ए कामिल, मुत्तबे सुन्नत, जामेअ ए शराइत पीर के हाथों पर अपने गुनाहों से तौबा करना और आइंदा उसी की रहनुमाई में इताअत ए शरियत का अहद करना है मुत्लक़न बैअ़त (पीरी-मुरीदी) न लाज़िमो ज़रूरी है और न बिल्कुल इसकी अहमियत और इफादियत का इंकार किया जा सकता है। पीर फारसी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जिस का मायना बुज़ुर्ग, मुअम्मर, उमर-रशीदा शख्स के होते हैं ये लफ़्ज़ इस्तेलाही तौर पर दीनी बुज़ुर्ग, मुर्शिद या रहबर के लिए इस्तेमाल होता है जैसे पीरे तरीक़त, रहबरे शरियत बगैरह, मज़कूरा बाला मालूमात पीर मुरीदी के हवाले से काफी है

अब असल मौज़ू यानी पीर परस्ती की तरफ आते हैं इससे क़ब्ल कुछ बाते क़ारेईन हज़रात की नज़र है इस तहरीर से मक़सद तसव्वुफ और सूफिया या हकीकी पीर और मशाइख के ख़िलाफ़ लिखना नहीं। न-चीज़ खुद तरीक़त समेत तसव्वुफ का क़ाइल है मगर मुख़ालिफ उन जाली पीरों का हूँ जो बैअ़त जैसी चीज़ को मुनफ्अ़त बख्श कारोबार

के सिवा कुछ नहीं समझते। और मुरीदों में पीर परस्ती का रुझान इस क़दर कि शरियत परस्त बनने की कोई क़दर नहीं।

असलाफ की तारीख हमें पीर पसंद बनाती है, बर्रे सगीर में पीर परस्ती अब तो एक फैशन के तौर पर देखी जाने लगी है। ये कहते हुए कि ये हमारा पीर है वो तुम्हारा पीर है बगैरह इस बला में अक्सरियत मुलव्विस है। पीर परस्ती की इन्तेहा की एक मिसाल इस तौर पर समझ सकते हैं कि अगर सिर दर्द हो तो डॉक्टर की इजाज़त के बगैर दवाई नहीं लेंगे लेकिन तरीक़त और तसव्वुफ की बात हो तो पीर साहब के सामने जा बैठते हैं। दरअसल पीर परस्ती एक ऐसा मर्ज़ है जो अंधा और गूंगा बना देता है अकसर औक़ात अंधी मोहब्बत की तरफ ले जाने का बाइस भी बनती है। मौजूदा वक़्त में पीर साहब के हम ज़ुल्फ मुरिदीन, फैज़ याफ्ता मुअतक़ेदीन और मुहिब्बीन के साथ कुछ अमली तसावीर पेशे खिदमत हैं जो अंधी पीर-परस्ती में ज़्यादा और कुरआन और हदीस से दोस्ती में कम नज़र आते हैं।

(1) हमारे असलाफ की ज़िंदगी का ताल्लुक ज़िन्दगी के हर शोबे से था। मोहताज की ज़रूरियात का तकफ्फुल, मज़लूमों की इमदाद, बेसहारों को सहारा, ज़ईफ को सहारा, और हक के मितलाशी को सीधी राह दिखाना, मुरीदीन का तज़किया ए नफ्स और तसफिया ए क़ल्ब वगैरह, सुफिया ए किराम का काम ये ही होता है कि अल्लाह की मोहब्बत हर शैय पर ग़ालिब आ जाए। मगर पीर परस्ती के नशे में चूर मुरीदीन को देखें अगर किसी मुसलेह ने किसी बात को किताब और सुन्नत की रू से इस्लाह के लिए हल्का इशारा भी कर दिया तो साहिब के हाशिया बिरादर (मुरीदीन) की आवाज़, सदा बन कर गूंज़ती है कि आप ने ऐसी जसारत क्यूँ की?! इस जसारत का हक़ आप को किसने दिया?! आप बड़े गुस्ताख हैं वगैरह वगैरह। जब कि मुरीदीन हज़रात को मालूम होना चाहिए कि तरीकत बिला शरियत मकबूल नहीं।

(2) पीर परस्त हज़रात का ख़तरनाक रवैया ये है कि पीर साहब की ख्वाहिश और फरमाइश को वाजिब उल अमल समझते हैं इस जौक़ का ये आलम कि जो कपड़ा पीर साहब पहनेंगे या पसंद फरमाते हैं जुमला मुरीदीन ऐसी साज़ो रंग में मुलव्विस नज़र आते हैं खैर उस से कोई सरोकार नहीं, कहने वाली बात ये है कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो पीर साहब के मुरीदीन मस्जिद की सफों में नहीं, मेहमान नवाज़ी की तयारी में मस्त रहते हैं शायद गायबाना तौर पर मक्का में नमाज़ पढ़ते होंगे। (काश कि शरियत परस्त भी बन जाते!), पूछने पर मुरीदीन ये जवाब देते हैं कि पीर साहब के नाश्ते में कलकत्ता का रसगुल्ला पैकेट से निकाल कर प्लेट में रखने में मसरूफ थे।

खुलासा ए कलाम ये है कि अस्लाफ ए उम्मत में सलासिल, तरीक़त, तसव्वुफ, औलिया की बैअ़त और इरादत करना साबित है मगर पीर परस्त बन जाना ये गैर साबित और गलत है जिसकी तफ़सील ऊपर गुज़र चुकीं मगर हमें पीर परस्त नहीं, बल्कि पीर पसंद के साथ शरियत पसंद भी बनना है। जब के आज पीर परस्त मुरीदीन फौजे ज़फ़र की तरह नज़र आ रहे हैं। असलाफ ए उम्मत में बैअ़त और इरादत का मक़सद ये है कि बंदे के अंदर अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत मुअ़जज़न हो के हर अमल अल्लाह के लिए हो अपनी मर्ज़ी रब की मर्ज़ी पर हो और मुरीद इन सब पर अमल पैरा होने के लिये हमेशा तैयार हों कि बैअ़त होने का मक़सद वुसुल इल्ल्लाह ब-तरीक़े सुन्नते रसूल अल्लाह है बैअ़त इताअत ए शरियत के अहद का नाम है।

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TEHREEK NIZAM E MUSTAFA ﷺ

CONTACT US: 9675801761, 9720315389

VISIT: WWW.NIZAMEMUSTAFA.IN